*अर्थव्यवस्था की स्थिति**

प्रमुख व्यापारिक साझेदारों पर अमेरिकी व्यापार शुल्क लगाने और उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की राजकोषीय स्थिति को लेकर नई चिंताओं के मद्देनजर वैश्विक अनिश्चितता बनी रही। घरेलू कारकों से प्रेरित, 26-2025 की पहली तिमाही के दौरान पाँच तिमाहियों की उच्च वृद्धि दर से स्पष्ट रूप से भारतीय अर्थव्यवस्था ने उल्लेखनीय सुदृढ़ता प्रदर्शित की। ऐतिहासिक जीएसटी सुधारों से व्यापार करने में आसानी, कम खुदरा कीमतों और उपभोग वृद्धि कारकों में मजबूती के माध्यम से उत्तरोत्तर निरंतर सकारात्मक प्रभाव पड़ने की उम्मीद है। सीपीआई हेडलाइन मुद्रास्फीति बढ़ी, लेकिन लगातार सातवें महीने लक्ष्य दर से काफी नीचे रही। नीतिगत दरों में कटौती का लाभ उठाने में मदद करने के लिए प्रणालीगत चलनिधि अधिशेष में रही। अगस्त-सितंबर के दौरान भारतीय शेयर बाजारों में द्विदिशात्मक गतिविधियाँ देखी गईं। मजबूत सेवा निर्यात और मजबूत विप्रेषण प्राप्तियों के समर्थन से, भारत का चालू खाता घाटा पहली तिमाही में पिछले वर्ष की तुलना में कम हुआ।

परिचय

प्रमुख व्यापारिक साझेदारों के साथ अमेरिकी व्यापार नीति की अनिश्चितताओं, उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (एई) की राजकोषीय स्थिति पर नई चिंताओं और भू-राजनीतिक जोखिमों के मद्देनजर वैश्विक अनिश्चितता बनी रही। आर्थिक परिदृश्य पर अनिश्चितताओं के बादल छाए रहने के बावजूद, वैश्विक क्रय प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) अगस्त में 14 महीने के उच्चतम स्तर पर पहुँच गया, जिसमें विनिर्माण पीएमआई विस्तार क्षेत्र में पहुँच गया और सेवा क्षेत्र की गतिविधियों में भी जोरदार वृद्धि हुई। अगस्त में वैश्विक जिंस कीमतों में काफी हद तक गिरावट आई, हालाँकि अगस्त के उत्तरार्ध से चुनिंदा जिंसों, खासकर स्वर्ण और कॉफी की कीमतों में तीव्र वृद्धि देखी गई।

अगस्त में सभी उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में बॉण्ड प्रतिफल में मजबूती जारी रही क्योंकि ऋण स्थिरता संबंधी चिंताएँ केंद्र में रहीं। दूसरी ओर, वैकल्पिक सुरक्षित-आश्रय आस्तियों की माँग ने स्वर्ण की कीमतों को रिकॉर्ड ऊँचाई पर पहुँचा दिया। फेड द्वारा ब्याज दरों में ढील दिए जाने की बढ़ती उम्मीदों के कारण अगस्त के अंत से अमेरिकी बॉण्ड प्रतिफल में गिरावट आई है। इसके बाद सितंबर में, प्रतिफल में और गिरावट आई और फेड द्वारा ब्याज दरों में कटौती के बाद स्थिर हो गया। इन कारकों को दर्शाते हुए, अमेरिकी डॉलर भी अगस्त और सितंबर के अधिकांश समय में गिरता रहा। प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के इक्विटी बाजार अगस्त में मुख्य रूप से 2025 की दूसरी तिमाही की मज़बूत आय, फेड द्वारा ब्याज दरों में ढील दिए जाने की उम्मीदों और बिगटेक शेयरों को लेकर आशावाद के कारण उछाल में रहे। सितंबर में फेड द्वारा ब्याज दरों में कटौती ने, विशेष रूप से अमेरिका में, तेजी को और मज़बूत किया। जोखिम-मुक्त निवेशक धारणाओं के कारण अगस्त में उभरते बाजारों में इक्विटी प्रवाह कम रहा।

उन्नत अर्थव्यवस्थाओं और उभरते बाजारों व विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) में मुद्रास्फीति के रुझान अलग-अलग रहे। जहाँ उन्नत अर्थव्यवस्थाएँ स्थिर मुद्रास्फीति से जूझ रही थीं, वहीं ईएमडीई में अवस्फीति देखी गई। अगस्त-सितंबर में, प्रमुख केंद्रीय बैंकों ने मुद्रास्फीति की तुलना में घरेलू संवृद्धि और बेरोजगारी की चिंताओं को प्राथमिकता देते हुए अपनी बेंचमार्क ब्याज दरों में कटौती की।

भारतीय अर्थव्यवस्था ने उल्लेखनीय सुदृढ़ता प्रदर्शित की, जैसा कि घरेलू कारकों द्वारा संचालित, 2025-26 की पहली तिमाही के दौरान पाँच तिमाहियों की उच्च वृद्धि दर से स्पष्ट है। उपभोग व्यय और स्थायी निवेश गतिविधियाँ मज़बूत रहीं, जिससे निवल निर्यात में गिरावट नगण्य रही। आर्थिक गतिविधि के उच्च-आवृत्ति संकेतकों ने अगस्त में स्थिर वृद्धि दर्शायी, ग्रामीण माँग मज़बूत रही, हालाँकि शहरी माँग में कुछ कमजोरी बनी रही।

---

* यह आलेख रेखा मिश्रा, आशीष थॉमस जॉर्ज, शशि कांत, विश्वजीत मोहंती, दुर्गा जी, श्रेया कंसल, यामिनी झाम्ब, जेसिका मारिया एंथोनी, हरेंद्र कुमार बेहरा, वृंदा गुप्ता, आकाश राज, अमृता बसु, संजना सेजवाल, लव कुमार शांडिल्य, प्रशांत कुमार, श्रीतमा रे, प्रतिभा केडिया, नीलावा दास, अर्चना दिलीप, सुमित रॉय, योगेश राणा, अवनीश कुमार, पुलस्त्य बंद्योपाध्याय, सुप्रियो मंडल, पलक गोयल, युवराज कश्यप, रस्मी रंजन बेहरा और समृद्धि द्वारा तैयार किया गया है। उप गवर्नर, डॉ. पूनम गुप्ता द्वारा दिए गए मार्गदर्शन और टिप्पणियों को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया गया है। राखे पलुवई बालचंद्रन, सुभद्रा शंकरन और अभिनव नारायणन की सहकर्मी समीक्षा को भी स्वीकार किया जाता है। इस आलेख में व्यक्त विचार लेखकों के हैं और भारतीय रिज़र्व बैंक के विचारों का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

27 अगस्त, 2025 से अमेरिका को भारत के निर्यात पर 50 प्रतिशत का आयात शुल्क लागू होगा।[1] इसका तात्कालिक प्रभाव क्षेत्र-विशिष्ट हो सकता है, क्योंकि अमेरिका को भारत के लगभग 45 प्रतिशत व्यापारिक निर्यात को शुल्क से छूट प्राप्त है, जिसमें प्रमुख निर्यात उत्पाद, विशेष रूप से स्मार्टफोन और दवाइयाँ, शामिल हैं। व्यापार नीति की अनिश्चितताओं के बावजूद, अप्रैल-अगस्त 26-2025 के दौरान व्यापारिक निर्यात में सुदृढ़ता देखा गया है।

जीएसटी परिषद की 3 सितंबर की बैठक में लिए गए निर्णयों ने जीएसटी व्यवस्था में प्रमुख संरचनात्मक सुधारों को गति दी है, जिससे दरें और प्रक्रियाएँ सरल हुई हैं। दरों के सरलीकरण के अलावा, इन सुधारों ने उलटे शुल्क ढांचे[2] से जुड़ी चुनौतियों का भी समाधान किया है और प्रक्रियाओं को व्यापार-अनुकूल बनाया है, जिससे विशेष रूप से सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों और स्टार्टअप्स को लाभ हुआ है। कुल मिलाकर, इन सुधारों से कर संग्रह में उछाल आने, अनुपालन में सुधार होने और जीवनयापन में और अधिक सुगमता के साथ-साथ व्यापार करने में भी आसानी होने की उम्मीद है।

सीपीआई हेडलाइन मुद्रास्फीति में बढ़त हुई, लेकिन लगातार सातवें महीने लक्ष्य दर से काफी नीचे रही। खाद्य समूह ने समग्र मुद्रास्फीति में वृद्धि में मुख्य रूप से योगदान दिया। मूल मुद्रास्फीति (खाद्य और ईंधन मुद्रास्फीति को छोड़कर सीपीआई) में भी मामूली वृद्धि हुई, जो मुख्य रूप से स्वर्ण की कीमतों में तेजी के कारण हुई।

सितंबर की शुरुआत से ही कुल मिलाकर वित्तीय स्थितियाँ अनुकूल हो गई हैं। अगस्त और सितंबर (19 सितंबर तक) के दौरान प्रणालीगत चलनिधि अधिशेष में रही। भारित औसत कॉल दर - मौद्रिक नीति का परिचालन लक्ष्य - मोटे तौर पर कॉरिडोर के निचले आधे हिस्से में रही।

[1] 6 अगस्त, 2025 को अमेरिका ने भारत के आयात पर 31 जुलाई 2025 को लगाए गए 25 प्रतिशत के अतिरिक्त 25 प्रतिशत का अतिरिक्त टैरिफ लगाया।

[2] मानव निर्मित वस्त्र और उर्वरक क्षेत्र के लिए उलटे शुल्क ढांचे को ठीक किया गया है।

निश्चित आय वर्ग में, सितंबर में सरकारी बॉण्ड प्रतिफल में नरमी आई, क्योंकि सरकार ने राजकोषीय मजबूती के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। फरवरी से अगस्त 2025 के दौरान रेपो दर में 100 आधार अंकों की संचयी कमी का बैंक ऋण और जमा दरों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। अगस्त में बैंकों द्वारा ऋण वृद्धि थोड़ी बढ़कर दो अंकों में पहुँच गई, जबकि जमा वृद्धि स्थिर रही। 26-2025 के दौरान अब तक, वाणिज्यिक क्षेत्र में खाद्येतर बैंक ऋण का प्रवाह धीमा रहा; हालाँकि, गैर-बैंक स्रोतों से प्रवाह ने इसकी भरपाई कर दी।

अगस्त-सितंबर के दौरान भारतीय शेयर बाजारों में नीतिगत घोषणाओं और प्रमुख मैक्रो-डेटा रिलीज़ के कारण द्विदिशात्मक हलचल देखी गई। एसएंडपी सॉवरेन रेटिंग अपग्रेड और जीएसटी सुधारों की घोषणा के बाद अगस्त के मध्य में तेज़ी से उछाल दर्ज करने के बाद, अगस्त के अंत तक भारतीय निर्यात पर अतिरिक्त अमेरिकी टैरिफ लागू होने से शेयर बाजारों में गिरावट आई। इसके बाद, सितंबर की शुरुआत में पहली तिमाही के मज़बूत जीडीपी संवृद्धि दर और जीएसटी परिषद द्वारा दरों को युक्तिसंगत बनाने के फ़ैसले के कारण शेयर बाजारों में तेज़ी आई। हालाँकि विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने बिकवाली जारी रखी, लेकिन मज़बूत घरेलू संस्थागत ख़रीद ने इस निकासी की भरपाई कर दी।

वैश्विक व्यापार अनिश्चितताओं में वृद्धि के बावजूद, भारत के बाह्य क्षेत्र ने सुदृढ़ता दिखाया। 26-2025 की पहली तिमाही में चालू खाता घाटा पिछले वर्ष की तुलना में कम हुआ, जिसे मज़बूत सेवा निर्यात और मज़बूत धन विप्रेषण प्रवाह का समर्थन प्राप्त था। इन रुझानों से पूरे वर्ष घाटा कम और सीमित दायरे में रहने की उम्मीद है। जुलाई में निवल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) अंतर्वाह 38 महीने के उच्चतम स्तर पर पहुँच गया, जिसमें उच्च सकल एफडीआई और धीमी प्रत्यावर्तन और बाह्य एफडीआई का योगदान रहा। विदेशी मुद्रा आरक्षित निधि पर्याप्त बना रहा, जो बाह्य क्षेत्र की स्थिरता को दर्शाता है।

इस पृष्ठभूमि में, आलेख का शेष भाग चार खंडों में विभाजित है। खंड II वैश्विक अर्थव्यवस्था में तेज़ी से विकसित

हो रहे घटनाक्रमों को समाहित करता है। खंड III घरेलू समष्टि आर्थिक स्थितियों का आकलन प्रस्तुत करता है। खंड IV भारत की वित्तीय स्थितियों का सार प्रस्तुत करता है, जबकि खंड V समापन टिप्पणियाँ प्रस्तुत करता है।

II. वैश्विक व्यवस्था

प्रमुख व्यापारिक साझेदारों के साथ अमेरिकी व्यापार नीति की अनिश्चितताओं और भू-राजनीतिक जोखिमों के कारण वैश्विक घटनाक्रमों पर अनिश्चितता का साया मंडरा रहा है। अगस्त में उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में राजकोषीय स्थिरता को लेकर चिंताएँ प्रमुखता से उभरीं, जिसका वित्तीय बाजारों पर गहरा प्रभाव पड़ा। अमेरिका में, श्रम बाजार की नरमी और बढ़ती मुद्रास्फीति की चिंताओं के बीच, बढ़ते शेयर बाजारों के साथ-साथ उपभोक्ता भावना में भी कमजोरी देखी गई।

व्यापार नीति अनिश्चितताओं और सभी उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में ऋण स्थिरता पर नई चिंताओं के कारण अगस्त में वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता उच्च स्तर पर बनी रही। अमेरिका और कई व्यापारिक साझेदारों के बीच टैरिफ समझौतों के बाद, अमेरिका में आर्थिक और व्यापार नीति अनिश्चितता सूचकांकों में मामूली गिरावट आई। बढ़ती राजकोषीय स्थिरता संबंधी चिंताओं ने अगस्त में, विशेष रूप से यूरोप में, वित्तीय बाजार में अस्थिरता बढ़ा दी (चार्ट II.1ए और II.1बी)।

वैश्विक क्रय प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) अगस्त में 14 महीने के उच्चतम स्तर पर पहुँच गया, जो उत्पादन और नए कारोबार में निरंतर वृद्धि को दर्शाता है। वैश्विक विनिर्माण पीएमआई, जुलाई में उच्च उत्पादन के कारण संकुचन के बाद, अगस्त में विस्तार क्षेत्र में पहुँच गया - जो आंशिक रूप से संभावित टैरिफ वृद्धि से पहले उत्पादन में अग्रिम वृद्धि को दर्शाता है। पीएमआई सेवाओं में लगातार तेज़ वृद्धि जारी रही (सारणी II.1)।

पीएमआई सूचकांकों के अनुसार, अगस्त में अमेरिका, ब्रिटेन, जापान और यूरोज़ोन सहित प्रमुख उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में व्यावसायिक गतिविधियों में वृद्धि हुई। प्रमुख उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) में, चीन और भारत में व्यावसायिक गतिविधियों में वृद्धि हुई, जहाँ भारत ने एक दशक में अपनी उच्चतम दर दर्ज की, जबकि ब्राज़ील और रूस में संकुचन जारी रहा (चार्ट II.2ए)। प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में नए निर्यात ऑर्डरों में संकुचन देखा गया, जबकि भारत में विस्तार जारी रहा (चार्ट II.2बी)। वैश्विक आपूर्ति शृंखला दबाव सूचकांक अपने ऐतिहासिक औसत से नीचे चला गया (अनुबंध चार्ट ए1)।

चार्ट II.1: अनिश्चितता संकेतक

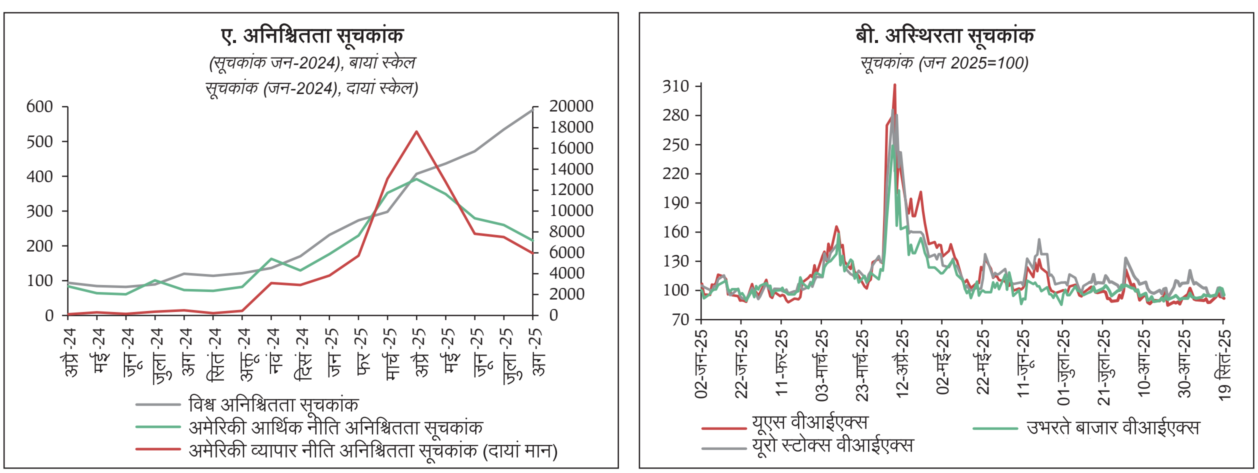

टिप्पणीयां: 1. विश्व अनिश्चितता सूचकांक (डब्ल्यूयूआई) की गणना इकॉनॉमिस्ट इटेलिजेंस यूनिट कंट्री रिपोर्टों में "अनिश्चित" (अथवा इसके विपर्यय) शब्द के प्रतिशत की गणना करके की जाती है।
2. आर्थिक नीति अनिश्चितता (ईपीयू) सूचकांक भविष्य की आर्थिक नीतियों के आसपास अनिश्चितता के स्तर को मापता है, जो प्रमुख समाचार पत्रों के लेखों में "अर्थव्यवस्था," "नीति" और "अनिश्चितता" जैसे विशिष्ट कीवर्ड की आवृत्ति से प्राप्त होती है। व्यापार नीति अनिश्चितता सूचकांक सरकारी व्यापार नीति निर्णयों की अप्रत्याशा को मापता है।

स्रोत: ब्लूमबर्ग; www.policyuncertainty.com; और विश्व अनिश्चितता सूचकांक (डब्ल्यूयूआई) डेटाबेस।

सारणी II.1 वैश्विक क्रय प्रबंधक सूचकांक

	अग-24	सितं-24	अक्तू-24	नवं-24	दिसं-24	जन-25	फर-25	मार्च-25	अप्रै-25	मई-25	जून-25	जुला -25	अग-25
पीएमआई समग्र	52.9	51.9	52.3	52.4	52.6	51.8	51.5	52.1	50.8	51.2	51.7	52.4	52.9
पीएमआई विनिर्माण	49.6	48.7	49.4	50.1	49.6	50.1	50.6	50.3	49.8	49.5	50.4	49.7	50.9
पीएमआई सेवाएं	53.9	52.9	53.1	53.1	53.8	52.2	51.5	52.7	50.8	52.0	51.8	53.4	53.4
पीएमआई निर्यात आदेश	49.0	48.5	48.9	49.3	48.7	49.6	49.7	50.1	47.5	48.0	49.1	48.5	48.9
पीएमआई निर्यात आदेश: विनिर्माण	48.4	47.5	48.3	48.6	48.2	49.4	49.6	50.1	47.3	48.0	49.2	48.2	48.7
पीएमआई निर्यात आदेश: सेवाएं	50.8	51.6	50.7	51.3	50.3	50.2	50.2	50.1	48.2	47.9	48.7	49.4	49.3

50

<<<<<<संकुचन ………………………….. विस्तार>>>>>>

टिप्पणियाँ: 1. क्रय प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई), एक प्रसार सूचकांक, पिछले महीने की तुलना में प्रत्येक चर में हुए परिवर्तन को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि प्रत्येक चर बढ़ा/सुधरा है, गिरा/बिगड़ा है या अपरिवर्तित रहा है। पीएमआई मान >50 विस्तार को दर्शाता है, <50 संकुचन को दर्शाता है और =50 'कोई परिवर्तन नहीं' को दर्शाता है।

2. हीटमैप अप्रैल 2023 से मई 2025 तक के डेटा पर लागू किया जाता है। मानचित्र रंग कोडित है - लाल सबसे कम मूल्य को दर्शाता है, पीला 50 (या कोई परिवर्तन नहीं मूल्य) को दर्शाता है, और हरा प्रत्येक पीएम शृंखला में उच्चतम मूल्य को दर्शाता है।

स्रोत: एस & पी ग्लोबल।

जुलाई के मुकाबले अगस्त में कमोडिटी की कीमतों में कमी आई। वैश्विक खाद्य कीमतें पिछले महीने से काफी हद तक अपरिवर्तित रहीं क्योंकि मांस और चीनी की कीमतों में बढ़ोतरी अनाज और डेयरी की कीमतों में गिरावट से संतुलित हो गई।[3] वैश्विक बाजारों में आपूर्ति की अधिकता और अमेरिकी मध्यस्थता के बाद रूसी कच्चे तेल पर प्रतिबंधों में ढील की उम्मीदों के कारण अगस्त में कच्चे तेल की कीमतें कमजोर हुईं। ओपेक प्लस द्वारा उत्पादन बढ़ाने की घोषणा के बाद सितंबर में कच्चे तेल की कीमतों में और गिरावट दर्ज की गई। फिर भी, उच्च आवृत्ति वाले कमोडिटी मूल्य संकेतकों ने अगस्त के उत्तरार्ध से चुनिंदा कमोडिटी की कीमतों में तेज बढ़ोतरी दिखाई। ब्राजील में आपूर्ति की कमी के कारण कॉफी की कीमतों में तेज बढ़ोतरी दर्ज की गई। सीमित दायरे में रहने के बाद, अगस्त के अंत से स्वर्ण की कीमतें 'सुरक्षित-हेवन' की मांग के

चार्ट II.2: क्रय प्रबंधकों का सूचकांक: विभिन्न क्षेत्राधिकारों में तुलना

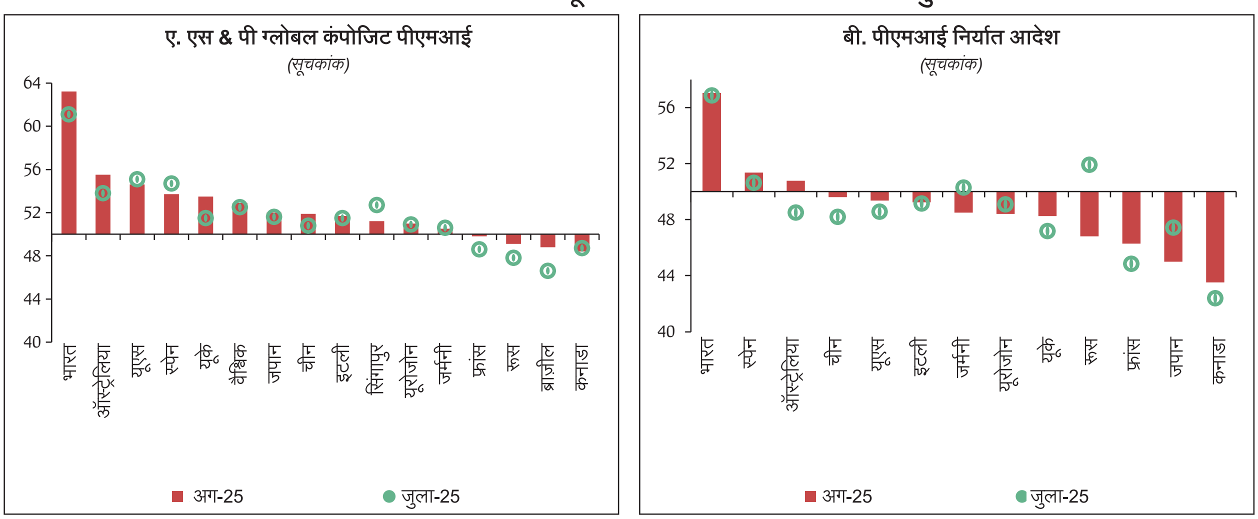

टिप्पणीयां: 50 का स्तर गतिविधि में कोई परिवर्तन नहीं होने का संकेत देता है, जबकि 50 से ऊपर का स्तर विस्तार का संकेत देता है और 50 से नीचे का स्तर संकुचन का संकेत देता है।
स्रोत: एस & पी ग्लोबल।

[3] अगस्त 2025 माह के लिए खाद्य एवं कृषि संगठन के खाद्य मूल्य सूचकांक के अनुसार।

चार्ट II.3: पण्य वस्तु और खाद्य कीमतें

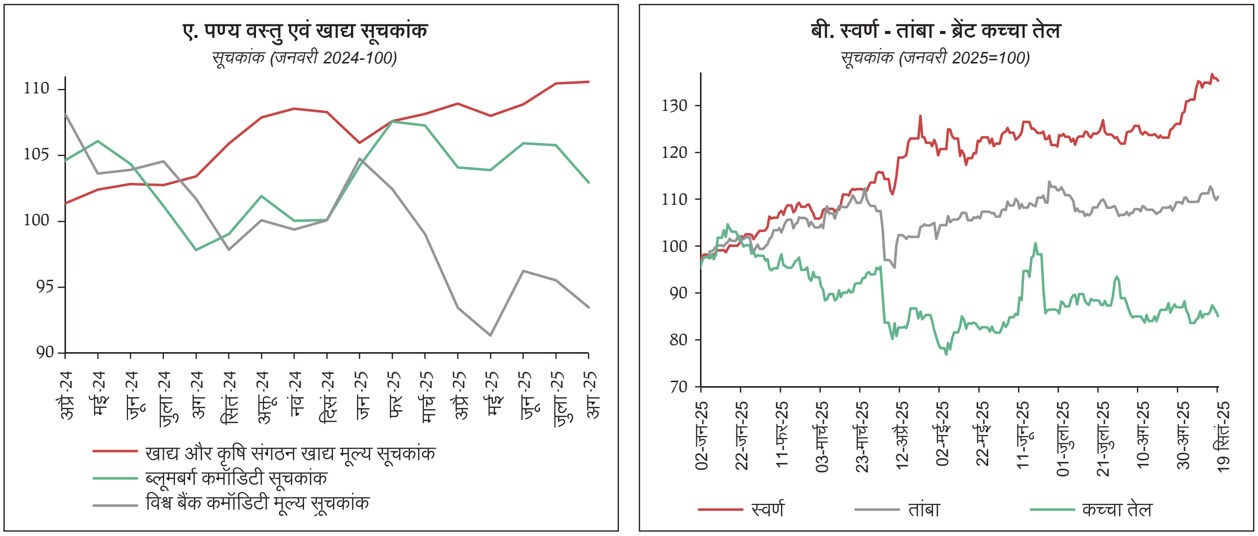

टिप्पणीयां: खाद्य और कृषि संगठन; ब्लूमबर्ग; और विश्व बैंक पिंक शीट।

कारण बढ़कर सार्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गईं (चार्ट II.3ए और 3बी)।

उन्नत अर्थव्यवस्थाओं और उदीयमान बाज़ार विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) में मुद्रास्फीति के रुझान अलग-अलग रहे। जहाँ उन्नत अर्थव्यवस्थाएँ स्थिर मुद्रास्फीति से जूझती रहीं, वहीं उदीयमान बाज़ार विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) में अवस्फीति देखी गई। अमेरिका में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) मुद्रास्फीति अगस्त में बढ़कर 2.9 प्रतिशत हो गई, जो जनवरी के बाद से सबसे अधिक है, हालाँकि मुख्य मुद्रास्फीति 3.1 प्रतिशत पर स्थिर रही। यूरो क्षेत्र में, अगस्त में मुख्य मुद्रास्फीति 2 प्रतिशत पर स्थिर रही, जबकि सेवाओं की मुद्रास्फीति में नरम ऊर्जा कीमतों के साथ-साथ थोड़ी नरमी देखी गई। यूके में भी मुद्रास्फीति 3.8 प्रतिशत पर स्थिर रही। जापान में मुख्य मुद्रास्फीति घटकर 2.7 प्रतिशत हो गई, जो अक्तूबर 2024 के बाद से सबसे कम है (चार्ट II.4ए)। प्रमुख उदीयमान

चार्ट II.4: हेडलाइन मुद्रास्फीति

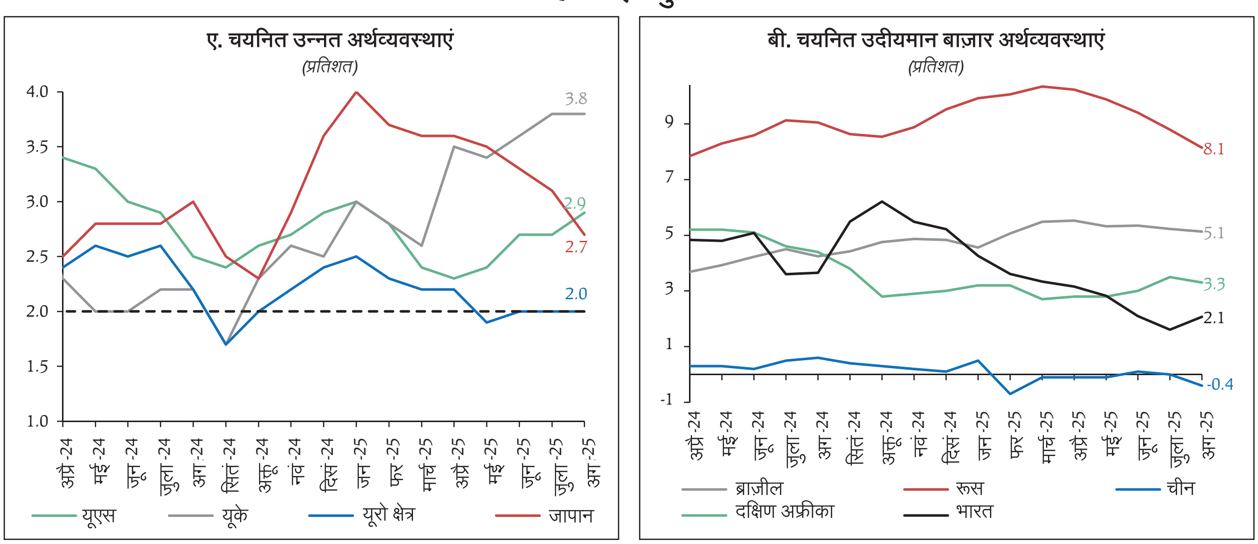

टिप्पणीयां: ब्लूमबर्ग और ओईसीडी।

बाज़ार विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) में, ब्राज़ील में मुद्रास्फीति में नरमी जारी रही, लेकिन यह लक्ष्य स्तर से ऊपर रही (अनुबंध चार्ट ए2)। कीमतों में लगातार गिरावट ने चीन को दो महीने के अंतराल के बाद फिर से अपस्फीति में धकेल दिया है। रूस में, हालाँकि यह नरमी की राह पर है, मुद्रास्फीति लक्ष्य से काफी ऊपर बनी रही। अगस्त में दक्षिण अफ्रीका की वार्षिक मुद्रास्फीति कम हुई (चार्ट II.4बी)।

प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के शेयर बाजार अगस्त में तेजी से बढ़े, जिसकी मुख्य वजह 2025 की दूसरी तिमाही की मज़बूत कमाई, फेड द्वारा ब्याज दरों में ढील की उम्मीद और बिगटेक शेयरों को लेकर आशावाद रहा। सितंबर में फेड द्वारा ब्याज दरों में कटौती ने, खासकर अमेरिका में, इस तेजी को और मज़बूत किया। यूरोप STOXX 600 इंडेक्स अगस्त के अंत में सुस्त कमाई के कारण मामूली रूप से गिरा। सितंबर में, फ्रांस की सॉवरेन रेटिंग में गिरावट के कारण शेयर बाजारों में मंदी रही। जापान के शेयर बाजारों ने अगस्त में अमेरिका-जापान व्यापार समझौते के समर्थन से मज़बूत प्रदर्शन दर्ज किया। बेहतर कारोबारी विश्वास और 2025 की दूसरी तिमाही के उम्मीद से बेहतर जीडीपी आंकड़ों के दम पर सितंबर में सूचकांकों में और तेजी आई। अमेरिका-चीन व्यापार युद्धविराम समझौते के 90 दिनों के विस्तार से अगस्त में चीनी शेयर बाजारों में तेजी आई, जिसे महीने के अंत में आवास क्षेत्र में प्रोत्साहन उपायों से और बल मिला। हालाँकि, विनियामकीय सख्ती, कमजोर उपभोक्ता खर्च और कारखाना उत्पादन के आंकड़ों की आशंकाओं के बीच सितंबर में सूचकांकों में मामूली गिरावट देखी गई (चार्ट II.5ए)।

अगस्त के अधिकांश समय में उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (एई) के बॉण्ड बाजार लंबी अवधि की उधारी लागतों में पर्याप्त वृद्धि से जूझते रहे, जो प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की राजकोषीय सेहत को लेकर नई चिंताओं के बीच कई वर्षों के उच्चतम स्तर को छू गई। अगस्त के अंत में, जुलाई के कमजोर मुद्रास्फीति आंकड़ों

चार्ट II.5: वैश्विक वित्तीय बाजार

ए. इक्विटी सूचकांक : चुनिंदा अर्थव्यवस्थाएं

सूचकांक (अप्रैल 07, 2025=100)

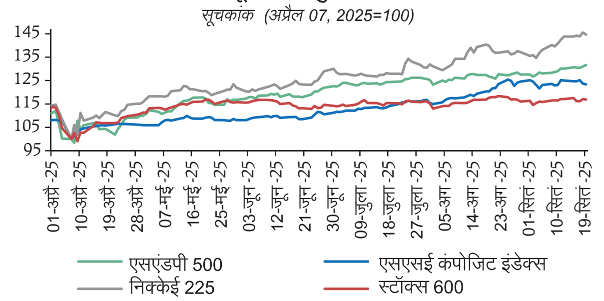

टिप्पणी: इक्विटी बाजार अमेरिका के लिए एसएंडपी 500, चीन के लिए एसएसई कंपोजिट इंडेक्स, जापान के लिए निक्केई 225 और यूरोप के लिए स्टॉक्स 600 द्वारा दर्शाए जाते हैं।
स्रोत: ब्लूमबर्ग।

बी. सरकारी बॉण्ड प्रतिफल

(प्रतिशत, बायां मान सूचकांक दायां मान)

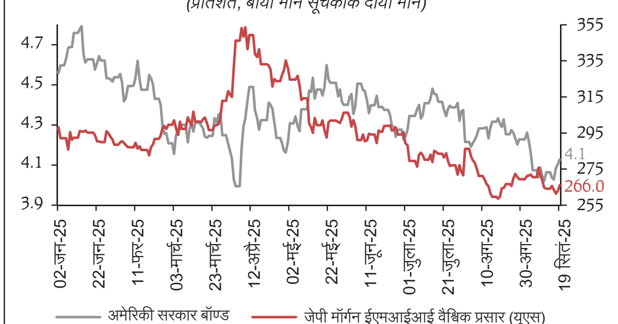

स्रोत: ब्लूमबर्ग।

सी. मुद्रा सूचकांक

(सूचकांक, बायां मान, सूचकांक, दायां मान)

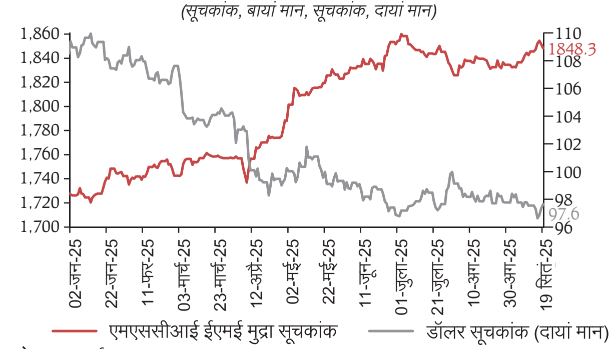

स्रोत: ब्लूमबर्ग।

डी. उदीयमान बाज़ारों में पोर्टफोलियो प्रवाह

(यूएस डॉलर बिलियन)

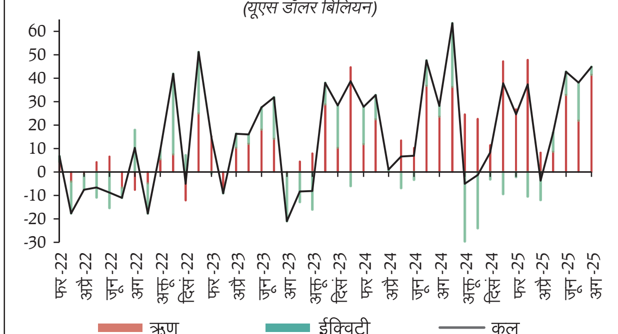

स्रोत: ब्लूमबर्ग।

और आर्थिक जोखिमों के संतुलन में बदलाव के बारे में फेड की सूचना के कारण सितंबर की बैठक में फेड द्वारा नीतिगत दरों में ढील दिए जाने की बढ़ती उम्मीदों के बाद अमेरिका में प्रतिफल में नरमी आई।[4] इसके बाद सितंबर में, प्रतिफल में और गिरावट आई और फेड द्वारा ब्याज दरों में कटौती के बाद स्थिर हो गया (चार्ट II.5बी)। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (एई) पर ईएमई बॉण्ड का प्रसार अगस्त के मध्य तक कम हुआ और महीने के अंत में इसमें तेजी आई। सितंबर में, उभरते बाजार की आस्तियों में मजबूत रुचि के कारण प्रसार मोटे तौर पर स्थिर रहा।

फेड द्वारा नीतिगत दरों में ढील दिए जाने के कारण अगस्त और सितंबर में अब तक अमेरिकी डॉलर में गिरावट आई है (चार्ट II.5सी)। जोखिम-मुक्त निवेशक धारणा के कारण उभरते बाजारों में इक्विटी प्रवाह अगस्त में कम रहा। दूसरी ओर, ऋण प्रवाह में तेज़ी से वृद्धि हुई (चार्ट II.5डी)।

अगस्त-सितंबर में, प्रमुख केंद्रीय बैंकों ने मुद्रास्फीति की तुलना में घरेलू संवृद्धि और बेरोजगारी की चिंताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी बेंचमार्क ब्याज दरों को कम करने का विकल्प चुना। अगस्त में, न्यूज़ीलैंड, ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड ने बेंचमार्क ब्याज दर में 25 आधार अंकों की कमी की। सितंबर में, अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने अपनी नीति दर में 25 आधार अंकों की कमी की। ईसीबी ने लगातार दूसरी बार अपनी नीति दर को अपरिवर्तित रखा। बैंक ऑफ इंग्लैंड ने भी सितंबर में अपनी ब्याज दरें स्थिर रखीं। ईएमडीई में, इंडोनेशिया, मेक्सिको और थाईलैंड ने अपनी नीतिगत दरों में 25 आधार अंकों की कटौती की। चीन ने अगस्त में लगातार तीसरे महीने अपनी बेंचमार्क उधार दर स्थिर रखी। सितंबर में, मलेशिया के केंद्रीय बैंक ने अपनी एक दिवसीय नीति दर को स्थिर रखा, जबकि रूस ने मुद्रास्फीति के दबाव में कमी का हवाला देते हुए इसे कम कर दिया (चार्ट II.6)।

III. देशज घटनाक्रम

भारतीय अर्थव्यवस्था ने उल्लेखनीय सुदृढ़ता प्रदर्शित किया है, जैसा कि 26-2025 की पहली तिमाही में अपेक्षा से बेहतर वृद्धि से स्पष्ट है। संवृद्धि के दो चालक - उपभोग और निवेश - मज़बूत बने रहे। कम मुद्रास्फीति के माहौल में मज़बूत ग्रामीण रिटेंशन द्वारा समग्र माँग की स्थिति मज़बूत बनी हुई है।

चार्ट II.6: नीति दरें

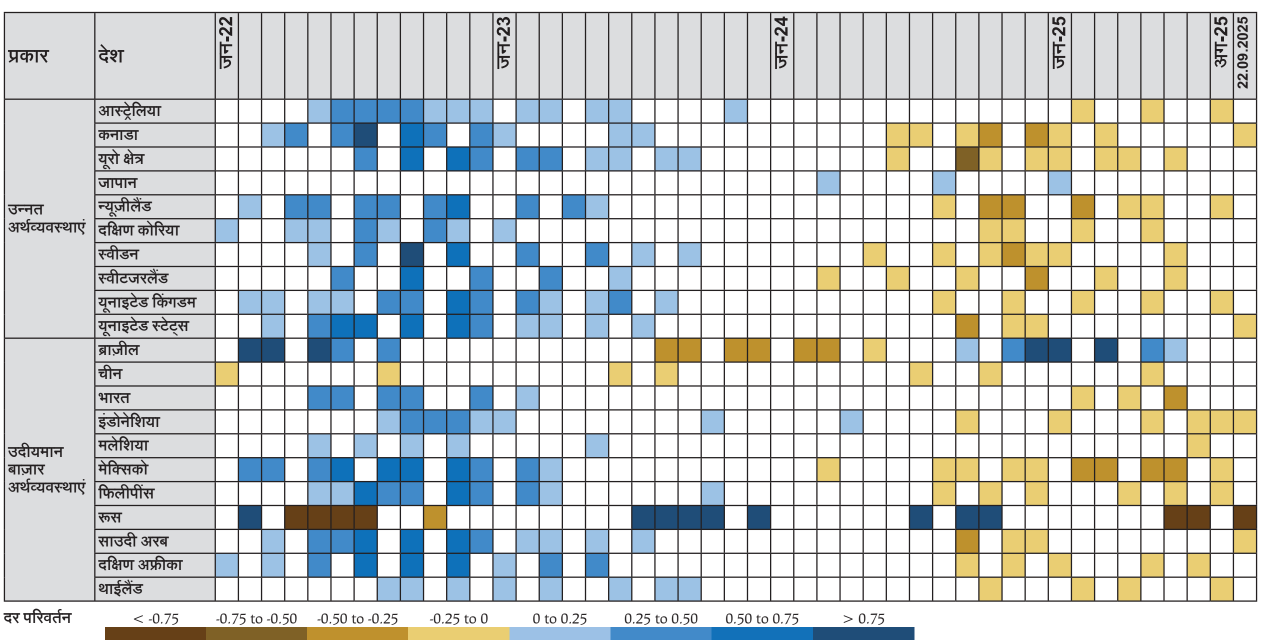

स्रोत: ब्लूमबर्ग।

[4] मौद्रिक नीति और फेड की रूपरेखा की समीक्षा - अध्यक्ष जेरोम एच. पॉवेल द्वारा «संक्रमण में श्रम बाजार: जनसांख्यिकी, उत्पादकता और समष्टि आर्थिक नीति» में भाषण, जो कि कैनसस सिटी, जैक्सन होल, व्योमिंग के फेडरल रिजर्व बैंक द्वारा प्रायोजित एक आर्थिक संगोष्ठी है।

समग्र मांग

वास्तविक जीडीपी वृद्धि ने गति पकड़ी और 26-2025 की पहली तिमाही में पांच तिमाहियों के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई, जो पिछली तिमाही में 7.4 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) से बढ़कर 7.8 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) हो गई। उपभोग और स्थिर निवेश क्रमशः 4.7 प्रतिशत अंक और 2.7 प्रतिशत अंकों का योगदान देने वाले प्रमुख चालक बने रहे। निजी अंतिम उपभोग व्यय में वृद्धि मजबूत ग्रामीण मांग और मुद्रास्फीति में कमी के कारण बनी रही। केंद्र और राज्य सरकारों दोनों के उच्च राजस्व व्यय (ब्याज भुगतान और सब्सिडी को छोड़कर) के कारण सरकारी अंतिम उपभोग व्यय में त्वरित वृद्धि देखी गई। निवल निर्यात संवृद्धि पर एक भार बन गया और पिछली तिमाही में अपने सकारात्मक योगदान को उलट दिया क्योंकि आयात विस्तार ने निर्यात वृद्धि को पीछे छोड़ दिया। (चार्ट III.1 और अनुबंध सारणी ए1)। नॉमिनल के हिसाब से, जीडीपी बढ़ोतरी तीन तिमाही में सबसे कम 8.8 प्रतिशत रही। नॉमिनल और वास्तविक जीडीपी बढ़ोतरी के बीच का अंतर कम होने का कारण जीडीपी डिफ्लेटर में तेजी से कमी आना और अब तक के सबसे निचले स्तर 0.9 प्रतिशत पर आना था (अनुबंध चार्ट ए6)।

अगस्त में समग्र आर्थिक गतिविधि के उच्च-आवृत्ति संकेतक मज़बूत बने रहे। जीएसटी ई-वे बिलों में तेज़ वृद्धि हुई और वे दूसरे सबसे ऊँचे स्तर पर पहुँच गए, जो त्योहारी मौसम के लिए इन्वेंट्री स्टॉकिंग और भारतीय निर्यात पर अतिरिक्त अमेरिकी टैरिफ से पहले ऑर्डर में वृद्धि को दर्शाता है। बिजली की मांग और पेट्रोलियम खपत में तेज़ी आई, लेकिन जीएसटी राजस्व और टोल संग्रह में वृद्धि मोटे तौर पर स्थिर रही। डिजिटल भुगतान में मात्रा के हिसाब से दो अंकों की मज़बूत वृद्धि दर्ज की गई, जबकि मूल्य के हिसाब से वृद्धि में नरमी देखी गई (सारणी III.I) ।

अगस्त के दौरान, ग्रामीण माँग मज़बूत रही, जिसमें मज़बूत खुदरा ट्रैक्टर बिक्री और अनुकूल मानसून तथा घटती मुद्रास्फीति से दोपहिया वाहनों की बिक्री में सुधार शामिल है। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी योजना (मनरेगा) के तहत रोज़गार की घरेलू माँग अगस्त में कम हुई, जो खरीफ की ज़्यादा बुआई के कारण रोज़गार के वैकल्पिक अवसरों की उपलब्धता को दर्शाती है। शहरी माँग में कुछ कमज़ोरी बनी रही, जैसा कि ऑटोमोबाइल बिक्री में मामूली वृद्धि और घरेलू हवाई यात्री यातायात में कमी से संकेत मिलता है (सारणी III.2)।

अगस्त में रोज़गार की स्थिति के विभिन्न संकेतकों ने मिली-जुली तस्वीर पेश की। शहरी बेरोज़गारी में भारी गिरावट के

चार्ट III.1: जीडीपी वृद्धि में भारित योगदान

(प्रतिशत अंक)

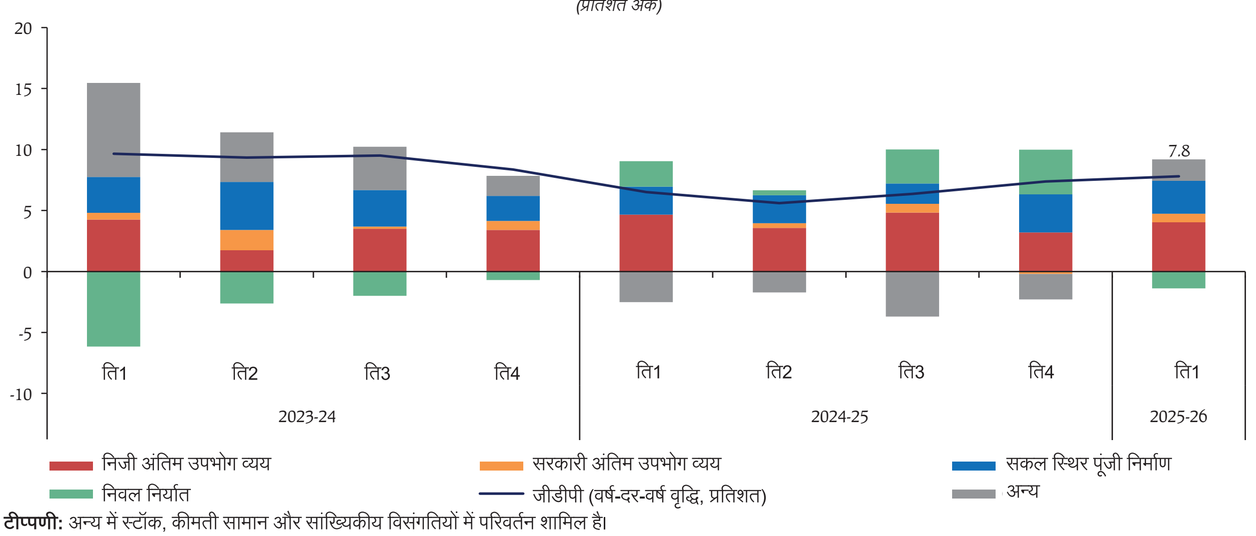

टीप्पणी: अन्य में स्टॉक, कीमती सामान और सांख्यिकीय विसंगतियों में परिवर्तन शामिल है।

स्रोत: एनएसओ।

सारणी III.1: उच्च आवृत्ति संकेतक- आर्थिक गतिविधि

	अग-24	सितं-24	अक्तू-24	नवं-24	दिसं-24	जन-25	फर-25	मार्च-25	अप्रै-25	मई-25	जून-25	जुला -25	अग-25
जीएसटी ई-वे बिल	12.9	18.5	16.9	16.3	17.6	23.1	14.7	20.2	23.4	18.9	19.3	25.8	22.4
जीएसटी राजस्व	10.0	6.5	8.9	8.5	7.3	12.3	9.1	9.9	12.6	16.4	6.2	7.5	6.5
टोल संग्रह	6.8	6.5	7.9	11.9	9.8	14.8	18.7	11.9	16.6	16.4	15.5	14.8	12.7
बिजली की मांग	-5.0	-0.8	-0.4	3.7	5.1	1.3	2.4	5.7	2.8	-4.8	-2.3	2.6	3.9
पेट्रोलियम की खपत	-3.1	-4.4	4.1	10.6	2.0	3.0	-5.2	-3.1	0.2	0.7	0.5	-3.9	2.6
जिनमें से पेट्रोल	8.6	3.0	8.7	9.6	11.1	6.7	5.0	5.7	5.0	9.2	6.8	5.9	5.5
डीज़ल	-2.5	-1.9	0.1	8.5	5.9	4.2	-1.3	0.9	4.2	2.1	1.5	2.4	1.2
विमानन टरबाइन ईंधन	8.1	10.4	9.4	8.5	8.7	9.4	4.2	5.7	3.9	4.3	3.3	-2.3	-2.9
डिजिटल भुगतान-मात्रा	34.9	36.3	40.3	30.1	33.1	33.0	26.7	30.8	30.0	29.2	28.3	30.9	28.8
डिजिटल भुगतान-मूल्य	16.7	21.5	27.5	9.5	19.6	18.6	9.5	17.3	18.4	12.6	17.4	16.6	5.6

<<संकुचन -- विस्तार>>

टिप्पणियाँ: 1. व-द-व वृद्धि (प्रतिशत में) की गणना सभी संकेतकों के लिए की गई है।
2. हीटमैप अप्रैल 2023 से अगस्त 2025 तक डेटा पर लागू किया जाता है। अगस्त 2025 के लिए डिजिटल भुगतान डेटा अनंतिम है।
3. हीटमैप प्रत्येक संकेतक के लिए डेटा सीमा को एक कलर ग्रेडिएंट योजना में अनुवाद करता है जिसमें लाल रंग से संबंधित डेटा शृंखला के उच्चतम मूल्यों के अनुरूप सबसे कम मूल्य और हरे रंग को दर्शाता है।

स्रोत: वस्तु एवं सेवा कर नेटवर्क (जीएसटीएन); आरबीआई; केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण (सीएलए), और पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय, भारत सरकार।

कारण अखिल भारतीय बेरोज़गारी दर घटकर 5.1 प्रतिशत रह गई। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में हुई वृद्धि के कारण अगस्त में श्रम बल भागीदारी दर और श्रमिक जनसंख्या अनुपात में वृद्धि हुई।[5] नौकरी जॉबस्पीक सूचकांक के अनुसार, व्हाइट-कॉलर नौकरियों की सूची में मामूली वृद्धि हुई, जिसका प्रमुख कारण एआई/एमएल और बीमा, यात्रा/आतिथ्य, बीपीओ/आईटीईएस और रियल एस्टेट जैसे गैर-आईटी क्षेत्रों में नियुक्तियाँ रहीं। विनिर्माण और सेवा दोनों के लिए पीएमआई रोज़गार सूचकांक विस्तार में रहे (सारणी III.3)।

वित्त वर्ष 26-2025 (अप्रैल-जुलाई) के दौरान, केंद्र सरकार के प्रमुख घाटा संकेतक पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में अधिक रहे।[6] यह मुख्य रूप से राजस्व प्राप्तियों में मंदी के साथ-साथ अधिक राजस्व और पूंजीगत व्यय के कारण था (चार्ट III.2ए)। राजस्व प्राप्तियों में नरमी का मुख्य

सारणी III.2: उच्च आवृत्ति संकेतक- ग्रामीण और शहरी मांग

		अग-24	सितं-24	अक्तू-24	नवं-24	दिसं-24	जन-25	फर-25	मार्च-25	अप्रै-25	मई-25	जून-25	जुला -25	अग-25
शहरी मांग	घरेलू हवाई यात्री यातायात	6.7	7.4	9.6	13.8	10.8	14.1	12.1	9.9	9.7	2.6	3.7	-2.5	-1.1
	खुदरा यात्री वाहन बिक्री	-4.5	-18.8	32.4	-13.7	-2.0	15.5	-10.3	6.3	1.6	-3.1	2.5	-0.8	0.9
ग्रामीण मांग	खुदरा ऑटोमोबाइल बिक्री	2.9	-9.3	32.1	11.2	-12.5	6.6	-7.2	-0.7	2.9	5.4	4.8	-4.3	2.8
	खुदरा ट्रैक्टर बिक्री	-11.4	14.7	3.1	29.9	25.8	5.2	-14.5	-5.7	7.6	2.8	8.7	11.0	30.1
	खुदरा दोपहिया वाहन बिक्री	6.3	-8.5	36.3	15.8	-17.6	4.2	-6.3	-1.8	2.3	7.3	4.7	-6.5	2.2
	'मनरेगा': काम की मांग	-16.0	-13.4	-7.6	3.9	8.2	14.4	2.8	2.2	-6.5	4.4	4.4	-12.3	-26.1

<<संकुचन -- विस्तार>>

टिप्पणियाँ: 1. सभी संकेतकों के लिए वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि (प्रतिशत में) की गणना की गई है।
2. हीटमैप अप्रैल 2023 से अगस्त 2025 तक डेटा पर लागू किया जाता है।
3. हीटमैप प्रत्येक संकेतक के लिए डेटा सीमा को एक कलर ग्रेडिएंट योजना में बदलता है जिसमें लाल रंग से संबंधित डेटा शृंखला के उच्चतम मूल्यों के अनुरूप सबसे कम मूल्य और हरे रंग को दर्शाता है।
4. अगस्त 2025 के लिए घरेलू हवाई यात्री ट्रैफिक की वृद्धि दर का डेटा रोज़ाना के डेटा को मिलाकर आकलित किया गया है।

स्रोत: भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन फेडरेशन (एफएडीए) और ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

[5] पीएलएफएस अगस्त 2025 मासिक बुलेटिन 15 सितंबर, 2025 को जारी किया जाएगा।

[6] लेखा महानियंत्रक द्वारा जारी नवीनतम आंकड़ों के अनुसार।

सारणी III.3: उच्च आवृत्ति संकेतक- रोजगार

	अग-24	सितं-24	अक्तू-24	नवं-24	दिसं-24	जन-25	फर-25	मार्च-25	अप्रै-25	मई-25	जून-25	जुला -25	अग-25
बेरोजगारी दर (पीएलएफएस: अखिल भारतीय)									5.1	5.6	5.6	5.2	5.1
बेरोजगारी दर (पीएलएफएस ग्रामीण)									4.5	5.1	4.9	4.4	4.3
बेरोजगारी दर (पीएलएफएस शहरी)									6.5	6.9	7.1	7.2	6.7
नौकरी जॉब स्पीक सूचकांक	-3.4	6.0	10.0	2.0	8.7	3.9	4.0	-1.5	8.9	0.3	10.5	6.8	3.4
ईपीएफओ निवल वेतन जोड़	53.5	52.1	53.3	52.9	53.4	54.8	54.5	53.4	54.2	54.9	55.1	53.3	53.1
पीएमआई रोजगार: विनिर्माण	53.1	53.4	54.3	56.6	55.5	56.3	56.2	52.5	53.9	57.1	55.1	51.4	52.2

<<संकुचन -- विस्तार>>

टिप्पणियाँ: 1. सभी पीएलएफएस संकेतक वर्तमान साप्ताहिक स्थिति में हैं और 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों के लिए हैं।
2. नौकरी सूचकांक और ईपीएफओ निवल वेतन वृद्धि के लिए वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि (प्रतिशत में) की गणना की गई है।
3. हीट मैप अप्रैल 2023 से अगस्त 2025 तक के डेटा पर लागू किया गया है।
4. हीट मैप प्रत्येक संकेतक के लिए डेटा रेंज को एक रंग ग्रेडिएंट स्कीम में परिवर्तित करता है, जिसमें लाल रंग न्यूनतम मानों को दर्शाता है और हरा रंग संबंधित डेटा शृंखला के उच्चतम मानों को दर्शाता है।
5. सभी पीएमआई मान सूचकांक के रूप में दर्शाए जाते हैं। 50 से अधिक पीएमआई मान विस्तार को दर्शाता है, 50 से कम संकुचन को और 50 'कोई परिवर्तन नहीं' को दर्शाता है। पीएमआई हीट मैप्स में, लाल रंग न्यूनतम मान को दर्शाता है, पीला रंग 50 (या कोई परिवर्तन नहीं) को दर्शाता है, और हरा रंग प्रत्येक पीएमआई शृंखला में उच्चतम मान को दर्शाता है।

स्रोत: सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (एमओएसपीआई), भारत सरकार; एस एंड पी ग्लोबल; कर्मचारी भविष्य निधि संगठन और इन्फो एज।

कारण प्रत्यक्ष कर संग्रह, विशेष रूप से आयकर में कमी है।[7] हालांकि, अप्रत्यक्ष कर संग्रह में वृद्धि मोटे तौर पर पिछले वर्ष के अनुरूप थी।

अप्रैल-जुलाई 2025 के दौरान राज्यों का सकल राजकोषीय घाटा, वित्तीय वर्ष के बजट अनुमानों के अनुपात के रूप में, पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में अधिक रहा (चार्ट III.2बी)। यह मुख्यतः राज्यों के वस्तु एवं सेवा कर संग्रह में वृद्धि में कमी और बिक्री कर/वैट में वृद्धि में कमी के कारण था। जुलाई में राजस्व व्यय मजबूत रहा जबकि पूंजीगत व्यय धीमा रहा।

जीएसटी परिषद की 3 सितंबर की बैठक में लिए गए निर्णयों ने जीएसटी व्यवस्था में प्रमुख संरचनात्मक सुधारों को

चार्ट III. 2: प्रमुख राजकोषीय संकेतक (जुलाई के अंत तक)

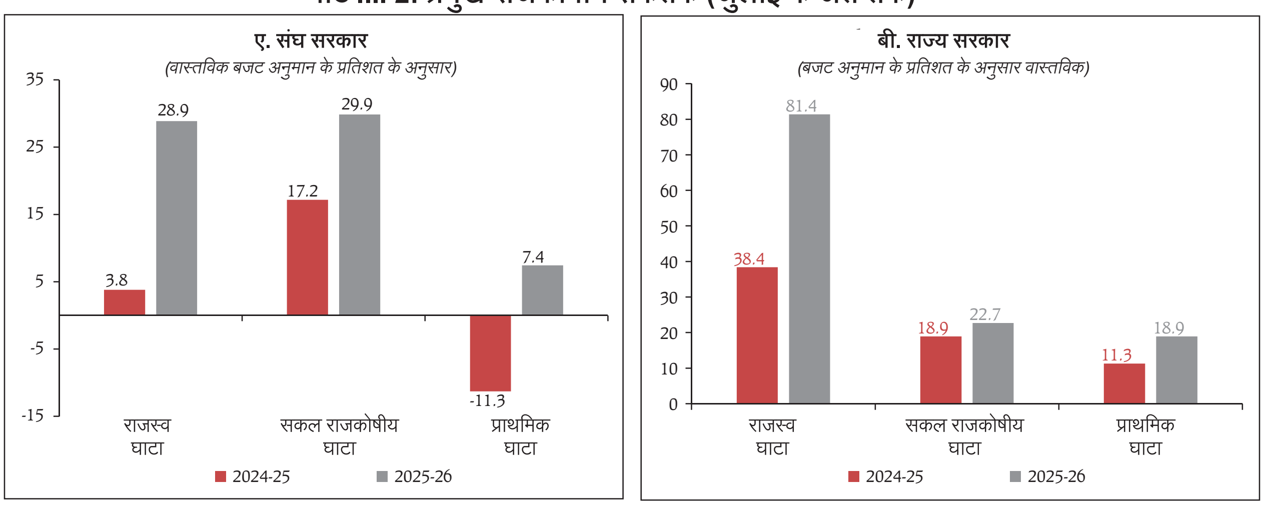

टिप्पणियाँ: 1. बजट अनुमानों के प्रतिशत के अनुसार ऋणात्मक प्राथमिक घाटे की संख्या प्राथमिक अधिशेष को इंगित करती है।
2. चार्ट बी में, डेटा 24 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों से संबंधित है।

स्रोत: लेखा महानियंत्रक; और भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक।

[7] प्रत्यक्ष करों में, आयकर राजस्व में कमी आई, हालाँकि कॉरपोरेट कर में पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में वृद्धि दर्ज की गई। जुलाई 26-2025 के अंत तक आयकर में 9.9 प्रतिशत की कमी आई, जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि में इसमें 53.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी।

गति दी, जिससे दरें और प्रक्रियाएं सरल हो गईं। चार मौजूदा स्लैब (18 ,12 ,5 और 28 प्रतिशत) को मुख्य रूप से दो (5 और 18 प्रतिशत) में सुव्यवस्थित किया गया है, जिसमें सभी क्षेत्रों में युक्तिकरण किया गया है। नया ढांचा आम आदमी की जरूरतों को प्रशासन में आसानी के साथ संतुलित करने के लिए बनाया गया है। अधिकांश आवश्यक वस्तुओं पर अब या तो ‹शून्य› या 5 प्रतिशत जीएसटी लगता है। अधिकांश इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं और मोटर वाहनों पर 18 प्रतिशत कर लगेगा (अनुबंध सारणी ए2)। विलासिता और पाप वस्तुओं के लिए एक नई श्रेणी भी बनाई गई है, जो 40 प्रतिशत कर योग्य है। दर सरलीकरण के अलावा, सुधार उल्टे शुल्क ढांचे से संबंधित चुनौतियों का भी समाधान करते हैं। प्रक्रियाओं को व्यवसाय के अनुकूल भी बनाया गया है कुल मिलाकर, इन सुधारों से कर-वृद्धि में वृद्धि, अनुपालन में सुधार, तथा जीवन-यापन में सुगमता के साथ-साथ व्यापार करने में भी सुगमता आने की उम्मीद है।

व्यापार

गैर-तेल घाटे में कमी के कारण व्यापारिक व्यापार घाटा अगस्त 2024 में 35.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर के रिकॉर्ड उच्च घाटे से अगस्त 2025 में 26.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक कम हो गया (चार्ट III.3)।[8]

व्यापारिक वस्तुओं के निर्यात में लगातार दूसरे महीने वृद्धि हुई (अनुबंध चार्ट ए3)[9]। इलेक्ट्रॉनिक सामान, इंजीनियरिंग सामान, रत्न एवं आभूषण, पेट्रोलियम उत्पाद; तथा दवाओं और फार्मास्यूटिकल्स का प्रदर्शन अच्छा रहा, जबकि तम्बाकू, सभी प्रकार के रेडीमेड वस्त्र और लौह अयस्क ने निर्यात में नकारात्मक योगदान दिया।

अगस्त 2025 में व्यापारिक वस्तुओं के आयात में कमी आई (अनुबंध चार्ट ए4)।[10] पेट्रोलियम कच्चे तेल और उसके उत्पादों, उर्वरकों, इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं, वनस्पति तेल और मशीनरी ने महीने के दौरान आयात वृद्धि में सकारात्मक योगदान दिया। सोना, परिवहन उपकरण, कोयला, कोक और ब्रिकेट, चाँदी, और लोहा एवं इस्पात के आयात में कमी आई।

चार्ट III. 3: पण्य वस्तु व्यापार घाटा

(प्रतिशत, व-द-व बायां स्केल; यूएस डॉलर बिलियन, दायां स्केल)

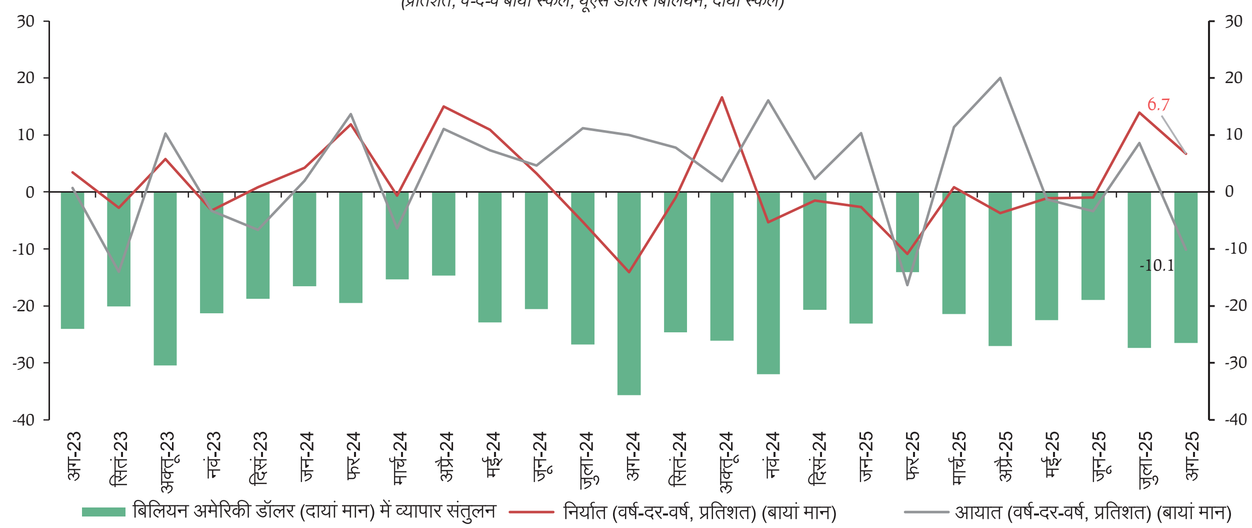

स्रोत: पीआईबी; डीजीसीआईएंड; और आरबीआई स्टाफ के अनुमान।

8 तेल व्यापार घाटा अगस्त में बढ़कर 8.8 अरब अमेरिकी डॉलर हो गया, जो एक वर्ष पहले 7.9 अरब अमेरिकी डॉलर था। कुल व्यापार घाटे में इसकी हिस्सेदारी अगस्त में बढ़कर 33.2 प्रतिशत हो गई, जो एक वर्ष पहले 22.2 प्रतिशत थी। गैर-तेल घाटा अगस्त में घटकर 17.7 अरब अमेरिकी डॉलर रह गया, जबकि एक वर्ष पहले यह 27.7 अरब अमेरिकी डॉलर था।

9 अगस्त में 35.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर [6.7 प्रतिशत की वृद्धि (वर्ष दर वर्ष)]

10 अगस्त में 61.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर [10.1 प्रतिशत की गिरावट (वर्ष दर वर्ष)]

चार्ट III.4: सेवा निर्यात और आयात का रुझान

प्रतिशत (व-द-व)

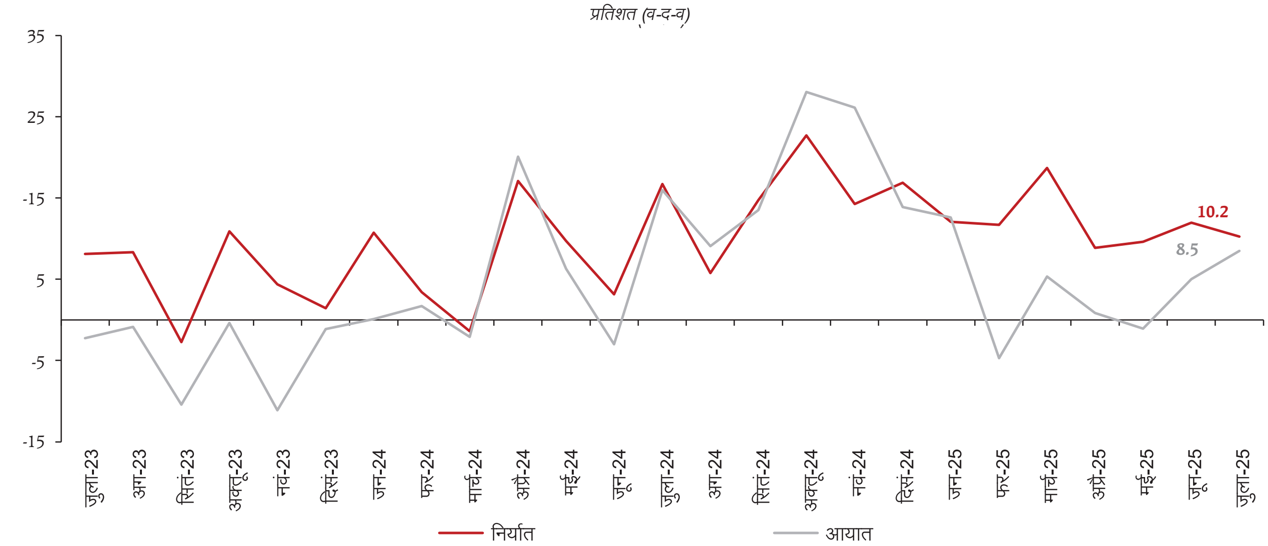

स्रोत: आरबीआई।

जुलाई 2025 में सेवा व्यापार मज़बूत बना रहा। निवल सेवा निर्यात आय 12.2 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) बढ़कर 16.4 अरब अमेरिकी डॉलर हो गई (चार्ट III.4)। सॉफ्टवेयर और व्यावसायिक सेवाओं के बल पर सेवा निर्यात में वृद्धि हुई । इसी समय, आयात में भी तेज़ी से वृद्धि हुई, जो सॉफ्टवेयर, व्यावसायिक और यात्रा सेवाओं के आयात में वृद्धि को दर्शाता है।

समग्र आपूर्ति

आपूर्ति पक्ष पर, बुनियादी कीमतों पर वास्तविक सकल मूल्य वर्धन (जीवीए) ने पिछली तिमाही में 6.8 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में ति1: 2025-26 में 7.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की। वास्तविक जीवीए वृद्धि में तिमाही गति एक मजबूत सेवा क्षेत्र और औद्योगिक क्षेत्र में तेजी से प्रेरित थी। कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में पिछली तिमाही की तुलना में क्रमिक रूप से कमी आई, फिर भी उनका प्रदर्शन वर्ष-दर-वर्ष आधार पर मजबूत रहा, जो सुदृढ़ता को दर्शाता है (चार्ट III.5 और अनुबंध सारणी ए3)। उद्योग और सेवाएं क्रमशः 1.3 और 5.9 प्रतिशत अंकों का योगदान करते हुए प्रमुख चालक बने रहे। विनिर्माण और निर्माण में उच्च मांग और बुनियादी ढांचे को बढ़ावा मिलने से मजबूत विस्तार हुआ।

कृषि

सामान्य से अधिक मानसूनी वर्षा के कारण खरीफ की बुवाई पूरे सीजन के लिए सामान्य क्षेत्रफल से अधिक रही (चार्ट III.6)।[11] बुवाई क्षेत्र में वृद्धि मुख्यतः चावल, मक्का, उड़द और गन्ने के क्षेत्र में हुई, जबकि तिलहन और कपास के क्षेत्र में गिरावट

चार्ट III.5: वास्तविक जीवीए वृद्धि प्रतिशत में भारित योगदान

प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष)

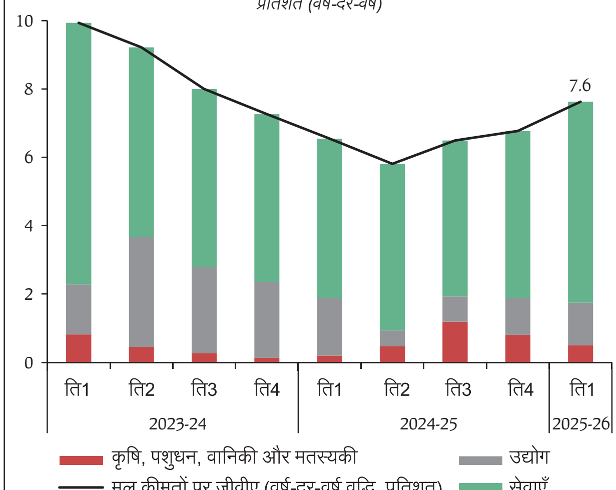

स्रोत: एनएसओ; और आरबीआई स्टाफ के अनुमान।

[11] सितम्बर, 2025 तक खरीफ की बुवाई 1115.9 लाख हेक्टेयर थी, जो सामान्य क्षेत्र का लगभग 101.8 प्रतिशत है।

चार्ट III.6: खरीफ फसल बुवाई क्षेत्रफल

(लाख हेक्टेयर बायें स्केल पर दायें स्केल पर प्रतिशत)

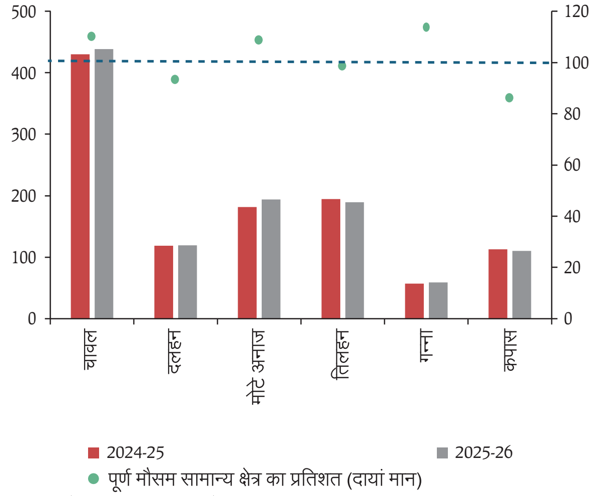

टिप्पणी: डेटा 19 सितंबर तक है।

स्रोत: कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय।

चार्ट III.7: ज़्यादा बारिश वाले प्रमुख खरीफ राज्य

(प्रतिशत हिस्सा, बायां स्केल; सामान्य से प्रतिशत विचलन, दायां स्केल)

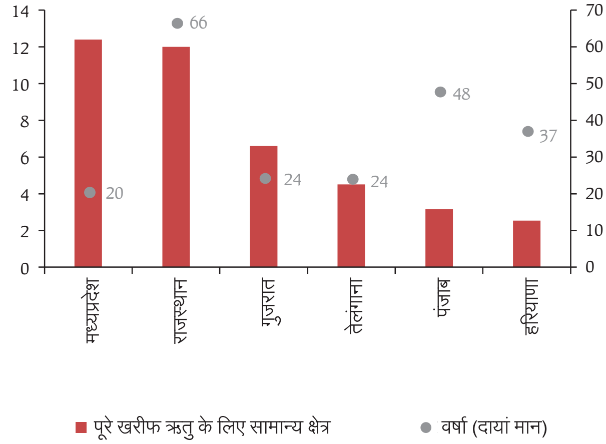

टिप्पणी: बारिश का डेटा 22 सितंबर 2025 का है।

स्रोत: कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय; भारतीय मौसम विज्ञान विभाग।

आई। तुअर की कीमतों में गिरावट और इथेनॉल उत्पादन में मक्के की बढ़ती माँग के कारण तुअर के रकबे पर मक्का काबिज़ हो रहा है।[12]

1 जून से 22 सितंबर, 2025 के दौरान अखिल भारतीय स्तर पर संचयी वर्षा सामान्य स्तर से 7 प्रतिशत अधिक रही, जबकि कुछ प्रमुख खरीफ उत्पादक राज्यों में अत्यधिक वर्षा हुई (चार्ट III.7)। जलाशयों का स्तर क्षमता के 90 प्रतिशत तक पहुँच गया है, जो आगामी रबी मौसम के लिए शुभ संकेत है (चार्ट III.8)।

खरीफ और रबी विपणन सत्रों में पर्याप्त खरीद के कारण सरकार के पास चावल और गेहूं का संयुक्त स्टॉक संतोषजनक बना रहा।[13]

उद्योग और सेवाएँ

औद्योगिक गतिविधि के मासिक संकेतक

औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) में वर्ष-दर-वर्ष बदलाव के आधार पर मापी गई औद्योगिक गतिविधियों में वृद्धि जुलाई 2025 में चार महीने के उच्चतम स्तर पर पहुँच गई। क्षेत्रीय स्तर पर, विनिर्माण क्षेत्र ने पिछले छह महीनों में सबसे ज़्यादा वृद्धि दर्ज की। इस्पात और कोयले में दो अंकों में वृद्धि के कारण अगस्त में आठ प्रमुख उद्योगों के सूचकांक में तेज़ उछाल आया।

अगस्त के लिए उपलब्ध उच्च आवृत्ति संकेतक विनिर्माण गतिविधि में विस्तार की ओर इशारा करते हैं, इसके पीएमआई लगभग 18 वर्ष के उच्चतम स्तर पर पहुंच गए हैं, मांग की

चार्ट III.8: जलाशय भराव

(पूर्ण जलाशय भराव के प्रतिशत के रूप में)

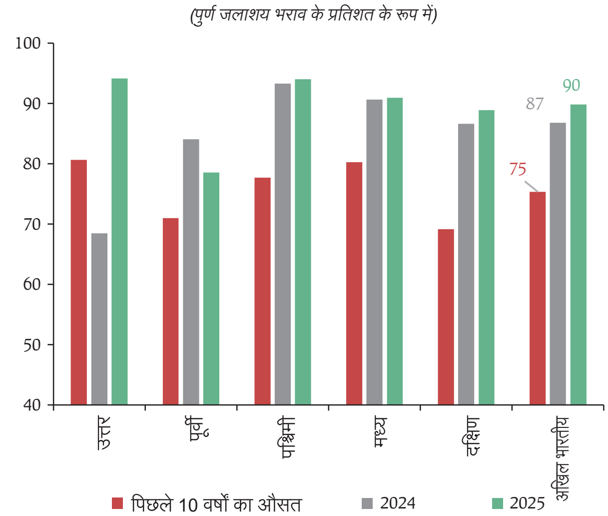

टिप्पणी: डेटा 18 सितंबर, 2025 तक है।

स्रोत: केंद्रीय जल आयोग।

[12] पिछले वर्ष की तुलना में तुअर की खेती में 0.5 प्रतिशत की गिरावट आई, जबकि मक्का की खेती में 12.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

[13] 1 सितंबर, 2025 तक सार्वजनिक स्टॉक बफर मानक से 2 गुना था।

स्थिति में चल रहे सुधार से कारखाने के ऑर्डर में वृद्धि हुई है। तिपहिया और दोपहिया वाहनों के मजबूत उत्पादन के कारण ऑटोमोबाइल उत्पादन मजबूत रहा। जीएसटी सुधारों से पहले डिस्पैच के पुनर्संयोजन के कारण यात्री वाहनों का उत्पादन घट गया। जीएसटी दर में कटौती के समर्थन से आगामी त्योहारी सीजन में यात्री वाहनों का उत्पादन और बिक्री बढ़ने की संभावना है। थर्मल कोयले के उत्पादन में सुधार के साथ पारंपरिक बिजली उत्पादन में सुधार हुआ। नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन ने अपनी गति बनाए रखी (सारणी III.4)। आपूर्ति शृंखला का दबाव अगस्त 2025 में थोड़ा बढ़ा, लेकिन अपने ऐतिहासिक औसत स्तर से नीचे रहा (अनुबंध चार्ट ए5)।

सेवा गतिविधि के मासिक संकेतक

भारत के सेवा क्षेत्र ने अगस्त में अपनी संवृद्धि गति बरकरार रखी, सेवा पीएमआई ने जून 2010 के बाद से सबसे ज़्यादा वृद्धि दर्ज की। अंतरराष्ट्रीय हवाई यात्री यातायात उच्च बना रहा और खुदरा वाणिज्यिक वाहन खंड में मज़बूत वृद्धि दर्ज की गई। बंदरगाह यातायात में जुलाई की तुलना में धीमी गति से वृद्धि हुई। इस्पात की खपत में वृद्धि तेज़ हुई जबकि सीमेंट उत्पादन में कमी आई (सारणी III.5)।

सारणी III.4: उच्च आवृत्ति संकेतक- उद्योग

	अग-24	सितं-24	अक्तू-24	नवं-24	दिसं-24	जन-25	फ़र-25	मार्च-25	अप्रै-25	मई-25	जून-25	जुला-25	अग-25
आईआईपी-शीर्षक	0.0	3.2	3.7	5.0	3.7	5.2	2.7	3.9	2.6	1.9	1.5	3.5	
आईआईपी विनिर्माण	1.2	4.0	4.4	5.5	3.7	5.8	2.8	4.0	3.1	3.2	3.7	5.4	
आईआईपी पूंजीगत वस्तुएँ	0.0	3.5	2.9	8.9	10.5	10.2	8.2	3.6	14.0	13.3	3.0	5.0	
पीएमआई विनिर्माण	57.5	56.5	57.5	56.5	56.4	57.7	56.3	58.1	58.2	57.6	58.4	59.1	59.3
पीएमआई निर्यात आदेश	54.4	52.9	53.6	54.6	54.7	58.6	56.3	54.9	57.6	56.9	60.6	57.3	56.1
पीएमआई विनिर्माण : भावी उत्पादन	62.1	61.6	62.1	65.5	62.5	65.1	64.9	64.4	64.6	63.1	62.2	57.6	60.5
आठ प्रमुख सूचकांक	-1.5	2.4	3.8	5.8	5.1	5.1	3.4	4.5	1.0	1.2	2.2	3.7	6.3
विद्युत उत्पादन: पारंपरिक	-3.8	-1.3	0.5	2.7	4.5	-1.3	2.4	4.8	-1.8	-8.2	-6.1	-0.8	1.0
विद्युत उत्पादन: नवीकरणीय	-3.7	12.5	14.9	19.0	17.9	31.9	12.2	25.2	28.0	18.2	28.7	26.4	
ऑटोमोबाइल उत्पादन	4.4	10.1	10.0	8.0	1.3	9.4	2.3	6.5	-1.7	5.2	1.2	10.7	8.1
यात्री वाहन उत्पादन	0.7	-3.4	-4.0	6.5	9.2	3.7	4.5	11.2	10.8	5.4	-1.8	0.1	-4.1
ट्रैक्टर उत्पादन	-1.0	2.7	0.4	24.7	20.9	23.7	-7.8	18.5	20.5	9.1	9.8	11.5	9.4
दोपहिया वाहनों का उत्पादन	4.9	12.9	13.3	8.8	-0.6	10.3	1.6	5.6	-4.1	4.7	1.4	12.3	10.0
तिपहिया वाहनों का उत्पादन	9.0	3.9	-6.7	-5.5	7.6	16.2	6.5	6.0	4.1	16.9	8.6	24.0	15.8
कच्चा इस्पात उत्पादन	3.9	0.3	4.2	4.5	8.3	7.4	6.0	8.5	9.3	11.0	12.6	14.0	11.1
तैयार इस्पात उत्पादन	3.0	0.7	4.0	2.8	5.3	6.7	6.7	10.0	6.6	7.0	10.9	13.8	13.0
पूंजीगत वस्तुओं का आयात	12.3	10.9	7.0	4.7	6.1	15.5	-0.5	8.6	21.5	14.3	2.6	12.2	

<<संकुचन -- विस्तार>>

टिप्पणियां : 1. सभी संकेतकों (पीएमआई को छोड़कर) के लिए वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि (प्रतिशत में) की गणना की गई है।

2. हीट मैप प्रत्येक संकेतक के डेटा रेंज को एक रंग ग्रेडिएंट स्कीम में परिवर्तित करता है, जिसमें लाल रंग न्यूनतम मानों को दर्शाता है और हरा रंग संबंधित डेटा शृंखला के उच्चतम मानों के अनुरूप होता है।

3. हीट मैप अप्रैल 2023 से अगस्त 2025 तक के डेटा पर लागू होता है, आईआईपी और बिजली उत्पादन: नवीकरणीय ऊर्जा को छोड़कर, जहाँ डेटा जून 2025 तक है।

4. सभी पीएमआई मान सूचकांक के रूप में रिपोर्ट किए जाते हैं। >50 से अधिक पीएमआई मान विस्तार को दर्शाता है, <50 से कम संकुचन को दर्शाता है और =50 'कोई परिवर्तन नहीं' को दर्शाता है। पीएमआई हीट मैप में, लाल रंग न्यूनतम मान को दर्शाता है, पीला रंग 50 (या कोई परिवर्तन नहीं) को दर्शाता है, और हरा रंग प्रत्येक पीएमआई शृंखला में उच्चतम मान को दर्शाता है।

स्रोत: सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय; एस एंड पी ग्लोबल; केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण (सीईए), विद्युत मंत्रालय; भारतीय ऑटोमोबाइल निर्माता सोसायटी (एसआईएएम); आर्थिक सलाहकार कार्यालय, भारत सरकार; संयुक्त संयंत्र समिति; वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय और वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय।

सारणी III.5: उच्च आवृत्ति संकेतक- सेवाएँ

	अग-24	सितं-24	अक्तू-24	नवं-24	दिसं-24	जन-25	फ़र-25	मार्च-25	अप्रै-25	मई-25	जून-25	जुला-25	अग-25
पीएमआई सेवाएँ	60.9	57.7	58.5	58.4	59.3	56.5	59.0	58.5	58.7	58.8	60.4	60.5	62.9
अंतरराष्ट्रीय हवाई यात्री यातायात	11.1	11.2	10.3	10.7	9.0	11.1	7.7	6.8	13.0	5.0	3.4	5.5	7.4
घरेलू हवाई माल	0.6	14.0	8.9	0.3	4.3	6.9	-2.5	4.9	16.6	2.3	2.6	4.8	
अंतरराष्ट्रीय हवाई माल	20.7	20.5	18.4	16.1	10.5	7.1	-6.3	3.3	8.6	6.8	-1.2	4.2	
बंदरगाह माल यातायात	6.7	5.8	-3.4	-5.0	3.4	7.6	3.6	13.3	7.0	4.3	5.6	4.0	2.5
खुदरा वाणिज्यिक वाहन बिक्री	-6.0	-10.4	6.4	-6.1	-5.2	8.2	-8.6	2.7	-1.0	-3.7	6.6	0.2	8.6
होटल अधिभोग	0.7	2.1	-5.3	11.1	-0.2	1.2	0.6	1.9	7.2	-2.8	-0.3	-2.4	
पर्यटक आगमन	-4.2	0.4	-1.4	-0.1	-6.6	-0.2	-8.6	-13.7	-3.8				
इस्पात खपत	14.1	13.5	12.7	12.3	11.4	11.4	11.3	11.5	6.0	7.1	7.9	7.7	8.2
सीमेंट उत्पादन	-2.5	7.6	3.1	13.1	10.3	14.3	10.7	12.2	6.3	9.7	8.2	11.6	6.1

<<संकुचन -- विस्तार>>

टिप्पणियां: 1. सभी संकेतकों (पीएमआई को छोड़कर) के लिए वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि (प्रतिशत में) की गणना की गई है।
2. हीटमैप प्रत्येक संकेतक के लिए डेटा सीमा को एक कलर ग्रेडिएंट में बदल देता है जिसमें लाल रंग से संबंधित डेटा शृंखला के उच्चतम मूल्यों के अनुरूप सबसे कम मूल्य और हरे रंग को दर्शाता है।
3. हीटमैप अप्रैल 2023 से अगस्त 2025 तक डेटा पर लागू किया जाता है, घरेलू और अंतरराष्ट्रीय एयर कार्गो और होटल अधिभोग के अलावा, जहां डेटा जुलाई 2025 तक है। पर्यटकों के आगमन के लिए नवीनतम डेटा अप्रैल 2025 तक है।
4. अगस्त 2025 की वृद्धि दर के लिए अंतरराष्ट्रीय हवाई यात्री यातायात पर डेटा की गणना दैनिक डेटा एकत्र करके की जाती है।
5. सभी पीएमआई मान सूचकांक के रूप में रिपोर्ट किए जाते हैं। >50 से अधिक पीएमआई मान विस्तार को दर्शाता है, <50 से कम संकुचन को दर्शाता है और =50 'कोई परिवर्तन नहीं' को दर्शाता है। पीएमआई हीट मैप में, लाल रंग न्यूनतम मान को दर्शाता है, पीला रंग 50 (या कोई परिवर्तन नहीं) को दर्शाता है, और हरा रंग प्रत्येक पीएमआई शृंखला में उच्चतम मान को दर्शाता है।

स्रोत: फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (एफएडीए); इंडियन पोर्ट्स एसोसिएशन; भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण; एचवीएस एनारॉक; पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार; संयुक्त संयंत्र समिति; आर्थिक सलाहकार कार्यालय; और एस और पी ग्लोबल।

मुद्रास्फ़ीति

मुख्य उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) मुद्रास्फीति[14] में मामूली वृद्धि हुई, और यह वृद्धि मुख्यतः खाद्य समूह से हुई (चार्ट III.9)। जुलाई में 1.6 प्रतिशत की तुलना में अगस्त में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) मुद्रास्फीति 2.1 प्रतिशत रही।

जून-जुलाई में अपस्फीति के बाद, अगस्त में खाद्य समूह में शून्य मुद्रास्फीति दर्ज की गई। तेल और वसा, अंडे, मांस और मछली तथा चीनी जैसे उप-समूहों में मुद्रास्फीति में मामूली वृद्धि हुई। अनाज, फल, दूध, तैयार भोजन और गैर-मादक पेय पदार्थों में मुद्रास्फीति में कमी देखी गई। सब्जियों, दालों और मसालों में अपस्फीति जारी रही (चार्ट III.10)।

अगस्त में ईंधन और प्रकाश मुद्रास्फीति में कमी आई, जबकि एलपीजी के लिए मुद्रास्फीति उच्च स्तर पर बनी रही। जबकि बिजली के लिए इसमें कमी आई।[15] केरोसिन की कीमतें निरंतर अपस्फीति में रहीं।

मूल मुद्रास्फीति जुलाई के 4.1 प्रतिशत से बढ़कर अगस्त में 4.2 प्रतिशत हो गई। मुद्रास्फीति में यह वृद्धि मुख्यतः ‹व्यक्तिगत देखभाल और प्रभाव'[16] उप-समूह के कारण हुई, जो स्वर्ण की बढ़ती कीमतों के कारण हुई। अगस्त में मूल मुद्रास्फीति में स्वर्ण का योगदान लगभग 28 प्रतिशत रहा। हालाँकि, कपड़े और जूते, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा, और परिवहन एवं संचार जैसे अन्य उप-समूहों में मुद्रास्फीति में कमी आई।

अगस्त में ग्रामीण और शहरी दोनों ही मुद्रास्फीति क्रमशः 1.7 प्रतिशत और 2.5 प्रतिशत तक बढ़ गई। राज्य-स्तरीय मुद्रास्फीति दरें (-) 1.40 प्रतिशत और 9.04 प्रतिशत के

[14] राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) द्वारा 12 सितंबर, 2025 को जारी अनंतिम आंकड़ों के अनुसार।

[15] ईंधन और प्रकाश उपसमूह में मुद्रास्फीति अगस्त में 2.4 प्रतिशत थी।

[16] सीपीआई बास्केट में ‹व्यक्तिगत देखभाल और प्रभाव› उप-समूह में साबुन, हेयर ऑयल और अन्य सौंदर्य प्रसाधनों के अलावा स्वर्ण और चांदी जैसी कीमती धातु की वस्तुएं भी शामिल हैं।

चार्ट III.9: सीपीआई मुद्रास्फीति के रुझान और कारण

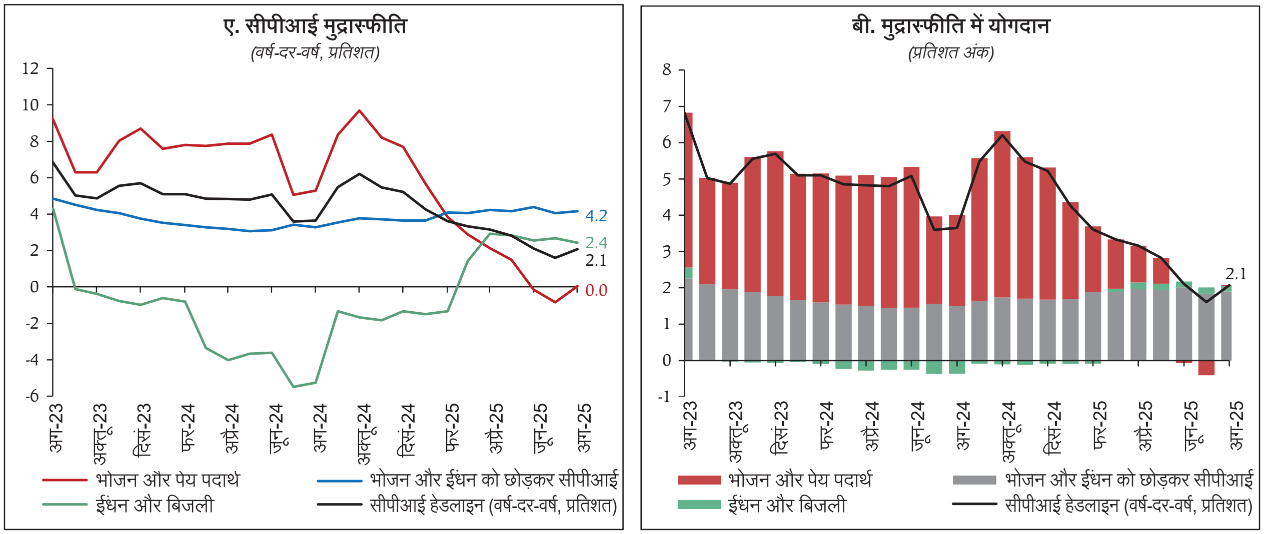

स्रोत: राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ); और आरबीआई स्टाफ का अनुमान।

बीच रही, लेकिन अधिकांश राज्यों में मुद्रास्फीति 4 प्रतिशत से नीचे रही, केवल दो राज्यों में मुद्रास्फीति अधिक दर्ज की गई (चार्ट III.11)।

सितंबर के अब तक (19 तारीख तक) उच्च-आवृत्ति वाले खाद्य मूल्य आँकड़े अनाज की कीमतों में बढ़ोतरी की ओर इशारा करते हैं। दालों में मिला-जुला रुख रहा, तुअर/अरहर दाल और मूंग दाल की कीमतों में गिरावट और चना दाल की कीमतों में बढ़ोतरी दर्ज की गई। खाद्य तेलों में, सरसों, सूरजमुखी और पाम तेल की कीमतों में मजबूती आई, जबकि मूंगफली तेल की कीमतों में कमी आई। टमाटर की कीमतों में उल्लेखनीय गिरावट के साथ प्रमुख सब्जियों (आलू, प्याज और टमाटर) की कीमतों में नरमी आई (चार्ट III.12)।

चार्ट III.10: उप-समूहों में वार्षिक मुद्रास्फीति

(वर्ष-दर-वर्ष प्रतिशत)

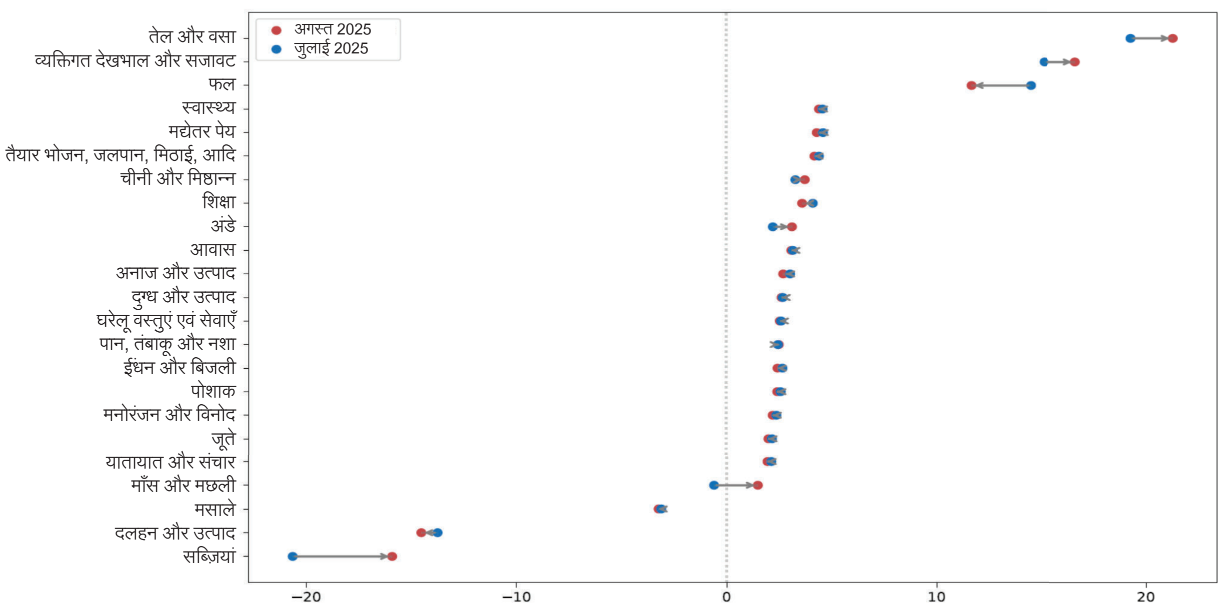

स्रोत: एनएसओ और आरबीआई स्टाफ के अनुमान।

चार्ट III.11: मुद्रास्फीति का स्थानिक वितरण: अगस्त 2025 (सीपीआई-संयुक्त)

(वर्ष-दर-वर्ष, प्रतिशत)

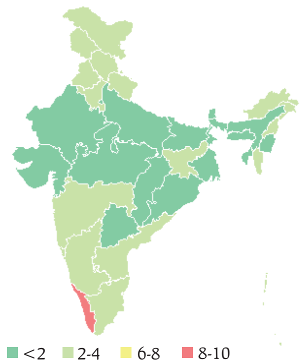

मुद्रास्फीति की सीमा	राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों की संख्या
<2	18
2-4	17
4-6	0
6-8	1
8-10	1

मुद्रास्फीति की प्रवृत्ति	राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों की संख्या
गिरावट	16
स्थिर	0
वृद्धि	21

टिप्पणी: मानचित्र केवल उदाहरण के लिए है।

स्रोत: एनएसओ; और आरबीआई स्टाफ के अनुमान।

सारणी III.6: पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतें

वस्तु	इकाई	घरेलू कीमतें			माह-दर-माह (प्रतिशत)	
		सितं-24	अग-25	सितं-25^	अग 25	सितं-25^
पेट्रोल	₹/लीटर	100.97	101.12	101.12	0.0	0.0
डीज़ल	₹/लीटर	90.42	90.53	90.53	0.0	0.0
केरोसिन (सब्सिडी वाला)	₹/लीटर	45.78	44.47	44.25	3.4	-0.5
एलपीजी (गैर-सब्सिडी)	₹/सिलेंडर	813.25	863.25	863.25	0.0	0.0

^: 1-19 सितंबर 2025 की अवधि के लिए।

टिप्पणि: केरोसिन के अलावा, ये कीमतें चार प्रमुख महानगरों (दिल्ली, कोलकाता, मुंबई और चेन्नई) में इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल) की औसत कीमतों को दर्शाती हैं। केरोसिन के लिए, ये कीमतें कोलकाता, मुंबई और चेन्नई में सब्सिडी वाले मूल्यों का औसत दर्शाती हैं।

स्रोत: आईओसीएल; पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ (पीपीएसी); और आरबीआई स्टाफ के अनुमान।

सितंबर में पेट्रोल और डीज़ल की खुदरा बिक्री कीमतें (19 तारीख तक) अपरिवर्तित रहीं। केरोसिन की कीमतों में थोड़ी कमी आई, जबकि रसोई गैस की कीमतें अपरिवर्तित रहीं (सारणी III.6)।

चार्ट III.12: डीसीए आवश्यक पण्य वस्तुओं के मूल्य

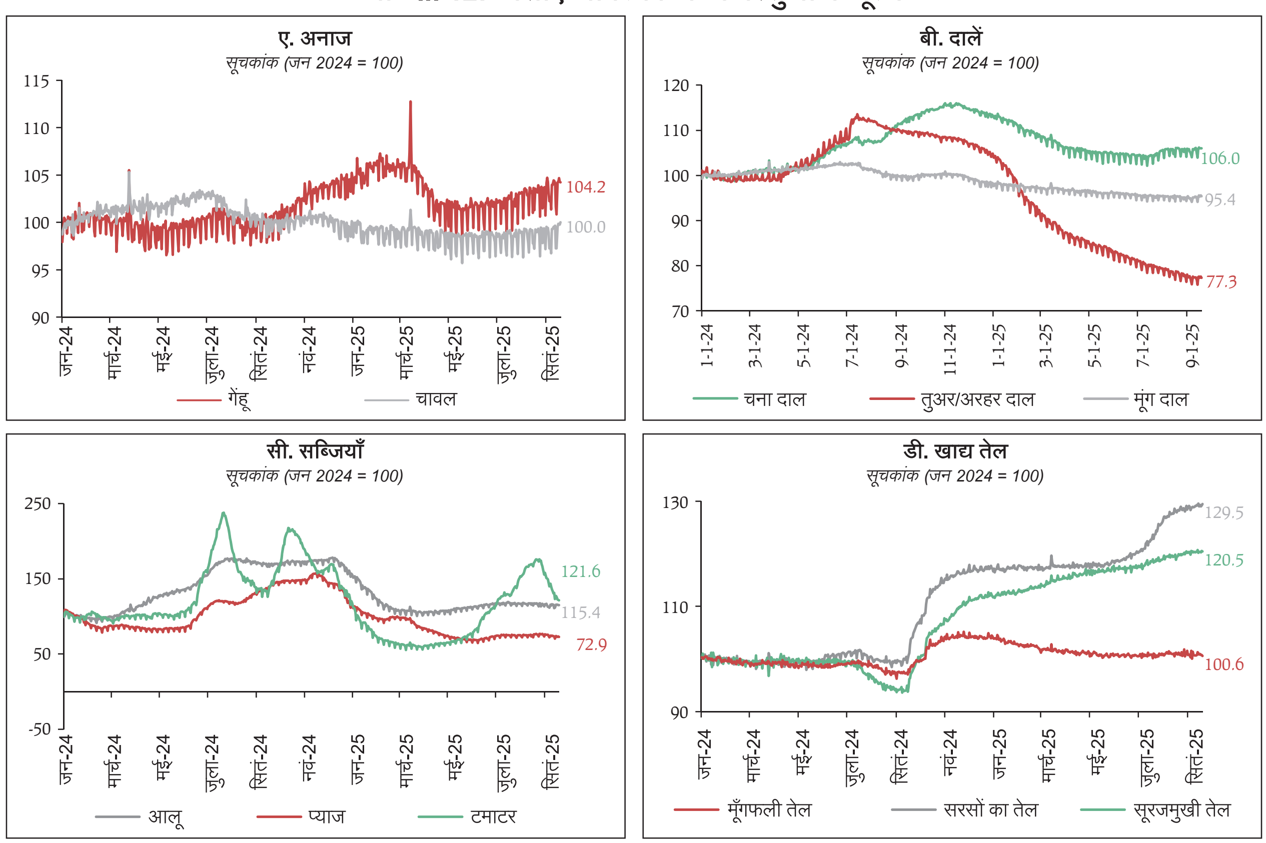

स्रोत: उपभोक्ता मामलों का विभाग, भारत सरकार; और भारतीय रिज़र्व बैंक स्टाफ के अनुमान।

चार्ट III.13: पीएमआई: इनपुट और आउटपुट कीमतें

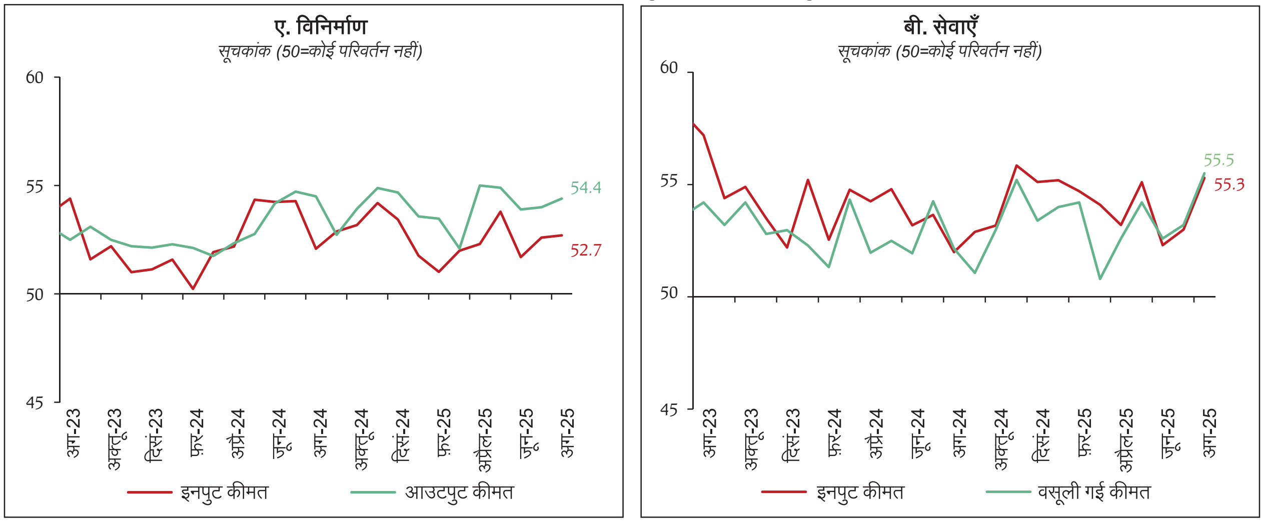

टिप्पणी: 50 का स्तर गतिविधि में कोई बदलाव नहीं दर्शाता है और 50 से ऊपर का स्तर विस्तार को दर्शाता है और इसके विपरीत।
स्रोत: एस और पी।

अगस्त 2025 के पीएमआई में विनिर्माण क्षेत्र के लिए इनपुट कीमतों में वृद्धि की दर में वृद्धि दर्ज की गई, जो धातुओं, चमड़े और इलेक्ट्रॉनिक पुर्जों की बढ़ी हुई कीमतों के कारण बढ़ी। सेवाओं में भी, वेतन वृद्धि के कारण इनपुट लागत में वृद्धि हुई। मांग की स्थिति में मजबूती के कारण सेवाओं और विनिर्माण दोनों कंपनियों के लिए विक्रय मूल्यों में भी तेजी आई (चार्ट III.13)।

IV. वित्तीय स्थितियाँ

सितंबर की शुरुआत से समग्र वित्तीय स्थितियाँ अनुकूल हो गई हैं, जिसका मुख्य कारण कॉर्पोरेट बाण्ड बाजार में नरमी है (चार्ट IV.1)।

अगस्त और सितंबर (19 सितंबर तक) के दौरान प्रणालीगत चलनिधि अधिशेष में रही। 6 सितंबर से प्रभावी नकद आरक्षित

चार्ट IV.1: भारत के लिए दैनिक वित्तीय स्थिति सूचकांक

(2012 से औसत से मानक विचलन)

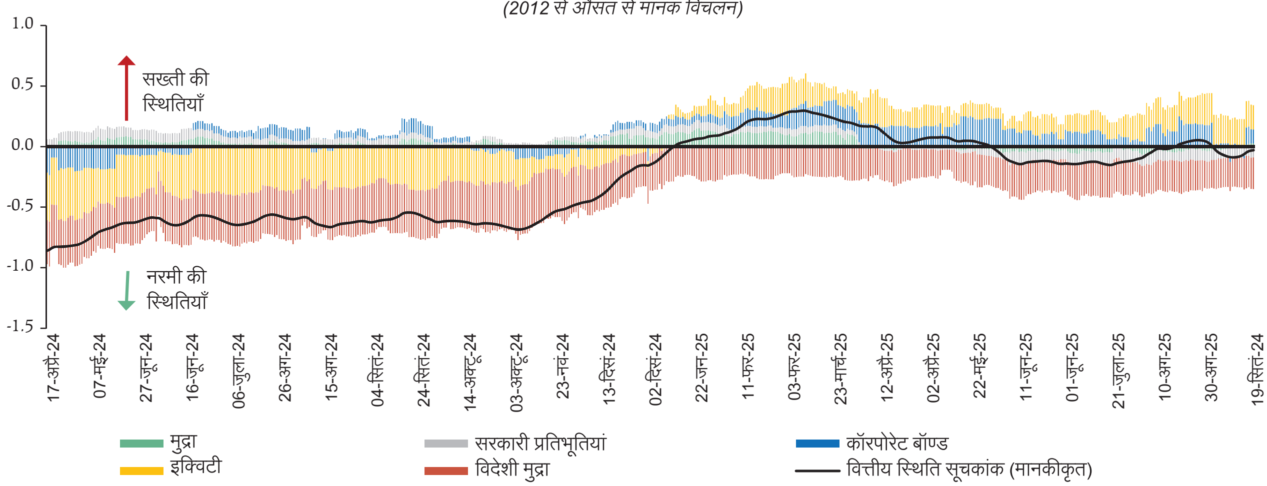

टिप्पणियाँ: वित्तीय स्थिति सूचकांक (एफसीआई) अपने ऐतिहासिक औसत पर आधारित एक मीट्रिक प्रदान करता है; इस संदर्भ में, एफसीआई का शून्य मान, एफसीआई में शामिल सभी वित्तीय संकेतकों के ऐतिहासिक औसत स्तर पर संचालित एक वित्तीय प्रणाली के अनुरूप होता है। परिणामों को प्रस्तुत करने के लिए, मानकीकृत एफसीआई का उपयोग किया जाता है।17
स्रोत: आरबीआई स्टाफ के अनुमान।

[17] विस्तृत कार्यप्रणाली के लिए देखें https://आरबीआई.org.in/Scripts/BS_ViewBulletin.aspx?Id=23451

अनुपात में 25 बीपीएस की कमी ने बैंकिंग प्रणालीगत चलनिधि की सहायता की। चलनिधि समायोजन सुविधा के तहत औसत दैनिक निवल अवशोषण 16 अगस्त से 19 सितंबर 2025 के दौरान ₹2.4 लाख करोड़ रहा, जबकि इससे पहले की एक महीने की अवधि में यह ₹3.09 लाख करोड़ था (चार्ट IV.2)। इस अवधि के दौरान, रिज़र्व बैंक ने अतिरिक्त चलनिधि को अवशोषित करने और पॉलिसी रेपो दर के साथ एकदिवसीय मुद्रा बाज़ार दरों को संरेखित करने के लिए 5 परिवर्तनीय दर रिवर्स रेपो नीलामियों (एक दिवसीय से -8दिवसीय परिपक्वता) का आयोजन किया। अधिशेष चलनिधि की स्थिति के बीच, स्थायी जमा सुविधा के तहत औसत शेष राशि लगातार ऊंची बनी रही और बैंकों का सीमांत स्थायी सुविधा का सहारा कम रहा।[18] रिज़र्व बैंक ने टैक्स आउटफ्लो की वजह से होने वाले चलनिधि के दबाव को कम करने के लिए 21 अगस्त और 16 से 19 सितंबर को परिवर्तनीय रेट रेपो नीलामी भी की।

मुद्रा बाजार

अधिशेष चलनिधि के बीच, भारित औसत कॉल दर – मौद्रिक नीति का परिचालन लक्ष्य – आम तौर पर अगस्त में कॉरिडोर के निचले आधे हिस्से और सितंबर के पहले आधे हिस्से में मँडराती रही। हालांकि, यह 19-15 सितंबर के दौरान सख्त हो गई क्योंकि कर बहिर्वाह के कारण सिस्टम चलनिधि कम हो गई (चार्ट IV.3ए)।[19] संपार्श्विक खंडों में रातोंरात दरें – त्रिपक्षीय और बाजार रेपो – और बेंचमार्क सुरक्षित एकदिवसीय रुपया दर बड़े पैमाने पर गैर-संपार्श्विक दर के साथ बढ़ी। तीन महीने के खजाना बिल, जमा प्रमाणपत्र और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों द्वारा जारी वाणिज्यिक पत्रों पर प्रतिफल इस अवधि के दौरान कम हो गया (चार्ट IV.3बी)।[20] मुद्रा बाजार में औसत जोखिम प्रीमियम (3 महीने के वाणिज्यिक पत्र और -91दिवसीय खजाना बिल पर प्रतिफल के बीच का अंतर) मामूली रूप से बढ़ा।[21]

चार्ट IV.2: चलनिधि परिचालन

(₹ लाख करोड़)

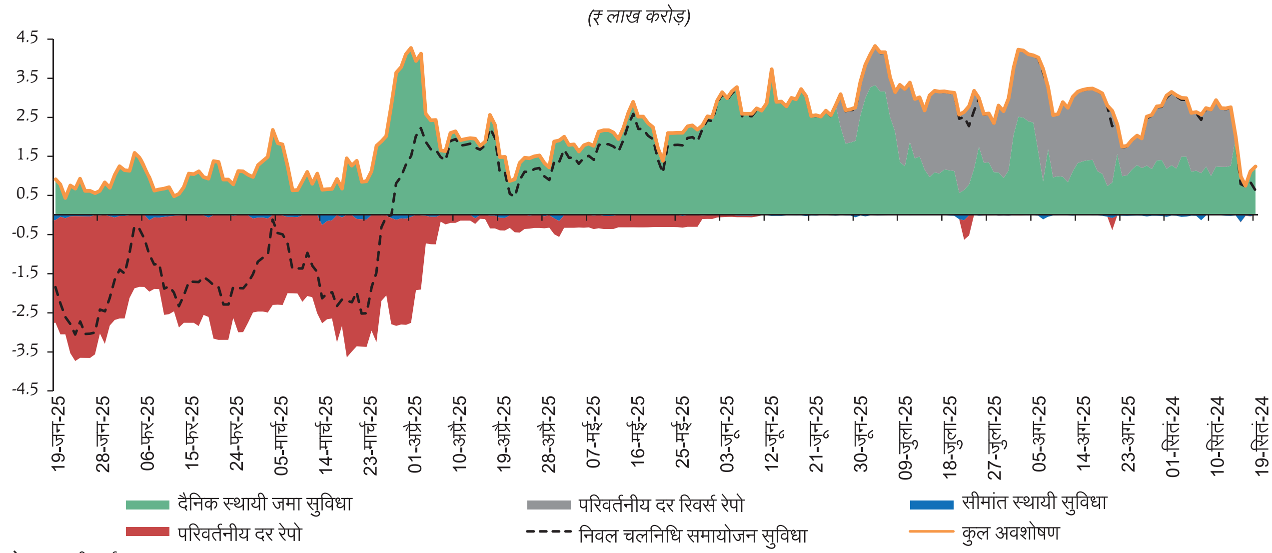

स्रोत: आरबीआई।

[18] स्थायी जमा सुविधा के अंतर्गत जमाशेष राशि 16 अगस्त से 19 सितंबर, 2025 के दौरान 1.21₹ लाख करोड़ थी, जबकि इससे पिछले एक महीने की अवधि में यह 1.32₹ लाख करोड़ थी। इस अवधि के दौरान एमएसएफ औसतन 0.03₹ लाख करोड़ रहा।

[19] 16 अगस्त से 19 सितम्बर, 2025 की अवधि के दौरान प्रसार औसत (-) 8 बीपीएस रहा, जबकि 16 जुलाई से 15 अगस्त, 2025 की अवधि के दौरान प्रसार औसत (-) 6 बीपीएस रहा।

[20] 3 महीने के खजाना बिल, एनबीएफसी द्वारा जारी 3 महीने के वाणिज्यिक पत्र, और 3 महीने के जमा प्रमाणपत्र पर औसत प्रतिफल 16 जुलाई से 15 अगस्त 2025 की अवधि की तुलना में 16 अगस्त से 19 सितंबर 2025 की अवधि के दौरान क्रमशः 9 बीपीएस, 18 बीपीएस और 5 बीपीएस तक बढ़ गई।

[21] अगस्त 16 से 19 सितम्बर 2025 की अवधि के दौरान 86 बीपीएस तक बढ़ गया, जबकि पूर्ववर्ती एक माह की अवधि में यह 76 बीपीएस था।

चार्ट IV.3: पॉलिसी कॉरिडोर और मुद्रा बाजार दरें

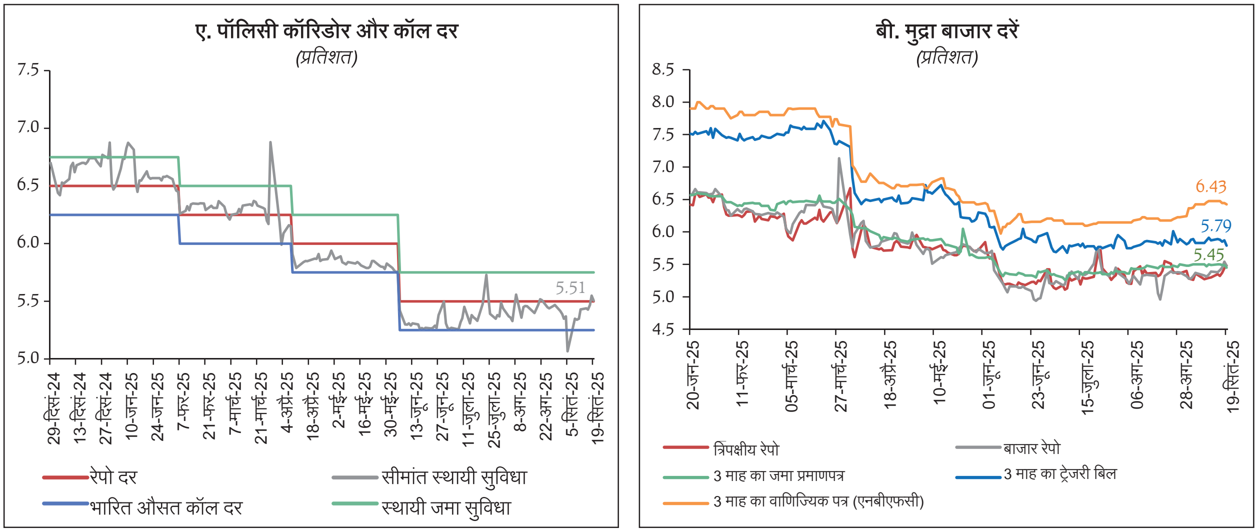

स्रोत: आरबीआई; भारतीय समाशोधन निगम लिमिटेड; और ब्लूमबर्ग।

सरकारी प्रतिभूति (जी-सेक) बाजार

निश्चित आय खंड में, अगस्त में प्रतिफल में वृद्धि हुई, लेकिन सितंबर में इसमें नरमी आई, क्योंकि बाजारों ने सरकार द्वारा राजकोषीय मजबूती के मार्ग पर पुनः ज़ोर देने पर सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की। औसत अवधि प्रीमियम (-10 वर्षीय सरकारी प्रतिभूतियों और -91दिवसीय खजाना बिल के प्रतिफल के बीच का अंतर) 16 अगस्त से 19 सितंबर, 2025 के दौरान पिछले एक महीने की अवधि की तुलना में 7 आधार अंकों (बीपीएस) बढ़ गया (चार्ट IV.4ए और IV.4बी)।

कॉर्पोरेट बॉण्ड बाजार

कॉर्पोरेट बॉण्ड प्रतिफल में अवधि और रेटिंग स्पेक्ट्रम में मिश्रित उतार-चढ़ाव देखा गया, जबकि संबंधित जोखिम-मुक्त दरों पर उनके प्रसार में गिरावट आई (सारणी IV.1)। कॉर्पोरेट बॉण्ड

चार्ट IV.4: सरकारी प्रतिभूतियों के बाज़ार में गतिविधि

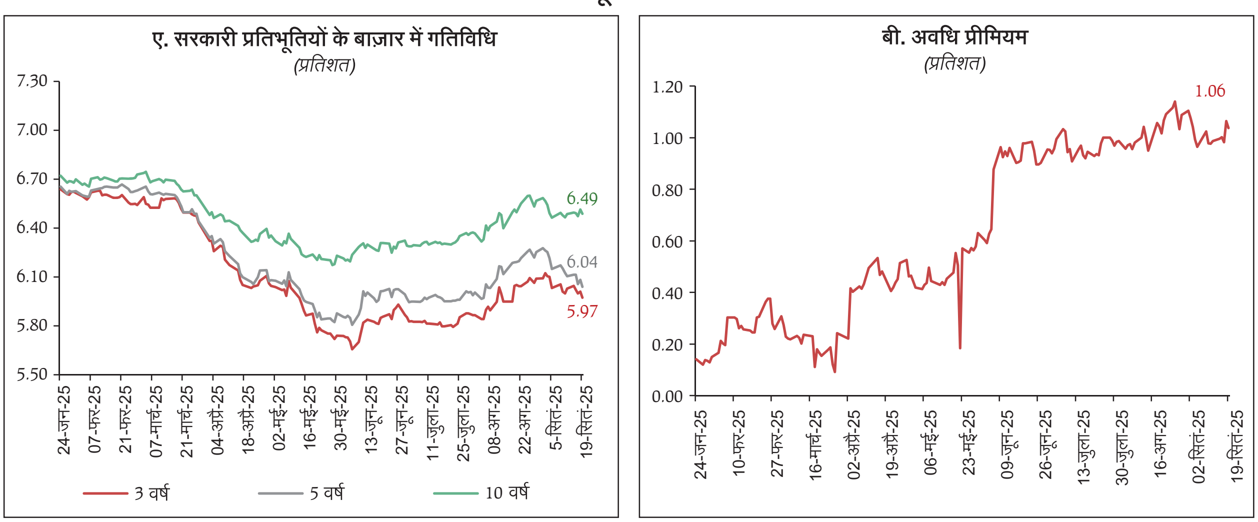

टिप्पणी: चार्ट बी में, टर्म प्रीमियम की गणना 10 साल की जी-सेक उपज और 91-दिवसीय खजाना बिल प्रतिफल के बीच के अंतर के रूप में की जाती है।
स्रोत: ब्लूमबर्ग: एफआईएमएमडीए; और आरबीआई स्टाफ अनुमान।

सारणी IV.1: कॉरपोरेट बॉण्ड- दरें और स्प्रेड

लिखत	ब्याज दरें *(प्रतिशत)*			स्प्रेड *(बीपीएस)* (संबंधित जोखिम-मुक्त दर से अधिक)		
	16 जुलाई 2025-15 अगस्त 2025	16 अगस्त 2025-18 सितंबर 2025	अंतर	16 जुलाई 2025-15 अगस्त 2025	16 अगस्त 2025-18 सितंबर 2025	अंतर
1	2	3	(4 = 3-2)	5	6	(7 = 6-5)
(i) एएए (1-वर्ष)	6.56	6.58	2	93	91	-2
(ii) एएए (3-वर्ष)	6.95	7.01	6	97	94	-3
(iii) एएए (5-वर्ष)	7.13	7.10	-3	95	81	-14
(iv) एए (3-वर्ष)	8.02	7.94	-8	204	199	-5
(v) बीबीबी- (3-वर्ष)	11.64	11.38	-26	567	567	0

टिप्पणी: प्रतिफल और स्प्रेड की गणना संबंधित अवधि के लिए औसत के रूप में की जाती है।
स्रोत: एफआईएमएमडीए।

जारी करने की संख्या संचयी आधार पर पिछले वर्ष की तुलना में अधिक रही, हालाँकि जुलाई में इसमें कुछ गिरावट आई।[22]

मुद्रा और ऋण

नकद आरक्षित अनुपात में बदलावों के पहले दौर के प्रभाव को समायोजित करते हुए, आरक्षित निधि मुद्रा वृद्धि सितंबर में बढ़ी, जो संचलन में मुद्रा में वृद्धि के अनुरूप थी। संचलन मुद्रा में वृद्धि त्योहारी मौसम और खरीफ की फसल की गतिविधियों से पहले मुद्रा की बढ़ती मांग को दर्शाती है। अगस्त के दौरान मुद्रा आपूर्ति (एम$_3$) में वृद्धि मोटे तौर पर स्थिर रही (चार्ट IV.5)।[23],[24]

चार्ट IV. 5: आरक्षित निधि मुद्रा और मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि (एम3)

(व-द-व, प्रतिशत)

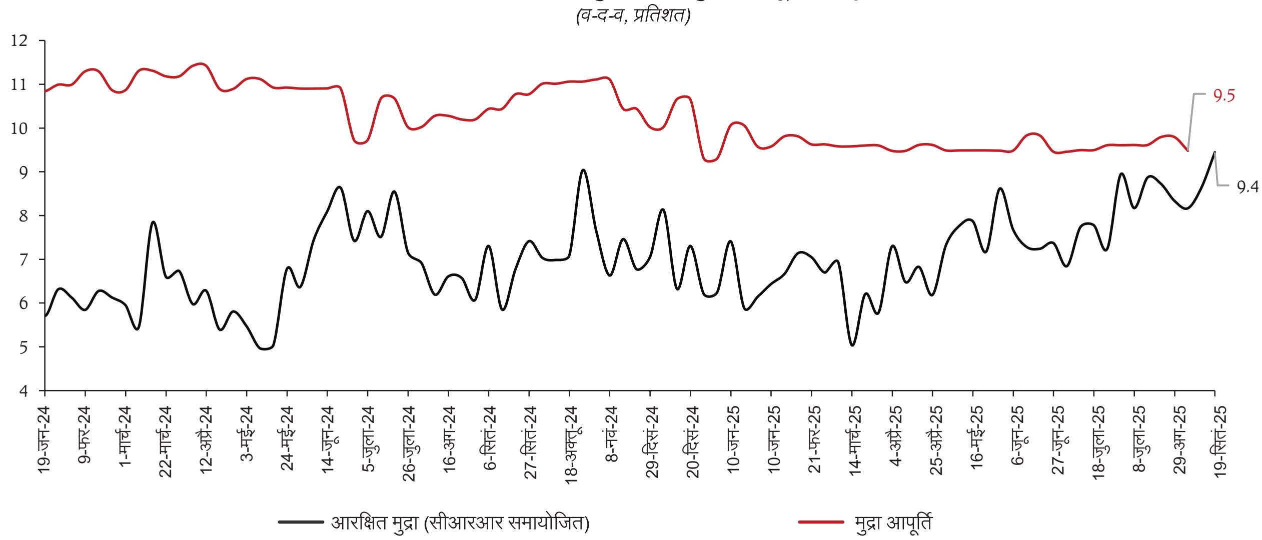

स्रोत: आरबीआई।

[22] जुलाई 2025 में घटकर 0.58₹ लाख करोड़ रह गया, जबकि जून 2025 में यह 1.08₹ लाख करोड़ था। संचयी आधार पर (अप्रैल से जुलाई), यह 26-2025 में 3.5₹ लाख करोड़ था, जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि में यह 2.5₹ लाख करोड़ था।

[23] 19 सितंबर 2025 तक आरक्षित निधि मुद्रा (सीआरआर के लिए समायोजित) में 9.4 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) की वृद्धि हुई [22 अगस्त, 2025 तक 8.7 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष)]। 19 सितंबर, 2025 तक प्रचलन में मुद्रा में 8.9 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) की वृद्धि हुई [22 अगस्त, 2025 तक 8.5 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष)]।

[24] 5 सितंबर 2025 तक मुद्रा आपूर्ति में 9.5 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) की वृद्धि हुई [8 अगस्त, 2025 तक 9.6 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष)]। इसमें एक गैर-बैंक के बैंक में विलय का प्रभाव भी शामिल है (1 जुलाई 2023 से प्रभावी)।

चार्ट IV.6: अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक: ऋण और जमा वृद्धि

(वर्ष-दर-वर्ष, प्रतिशत)

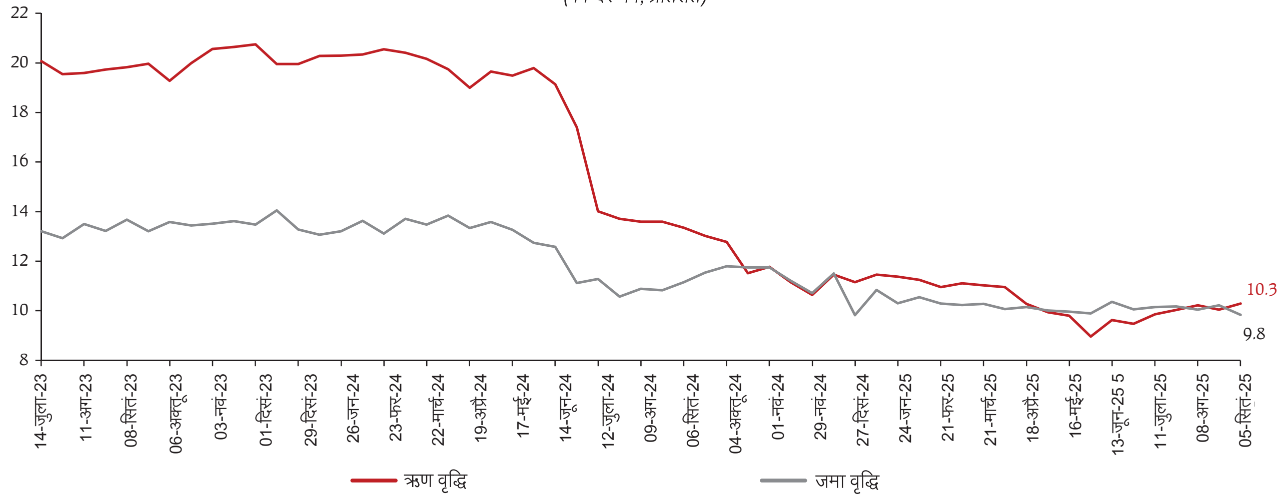

टिप्पणी: अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के आंकड़ों में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक भी शामिल हैं। इस डेटा में किसी गैर-बैंक के बैंक में विलय के प्रभाव को शामिल नहीं किया गया है।
स्रोत: पाक्षिक सेक्शन 42 रिटर्न्स, आरबीआई।

अगस्त में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की ऋण वृद्धि थोड़ी बढ़कर दो अंकों में पहुँच गई, जबकि जमाराशि वृद्धि स्थिर रही (चार्ट IV.6 और अनुबंध चार्ट ए7)।[25] 2025-26 के दौरान अब तक, वाणिज्यिक क्षेत्र में खाद्येतर बैंक ऋण का प्रवाह कम हुआ है; हालाँकि, गैर-बैंक स्रोतों से प्रवाह ने इसकी भरपाई कर दी है। परिणामस्वरूप, वाणिज्यिक क्षेत्र में वित्तीय संसाधनों का कुल प्रवाह एक वर्ष पहले इसी अवधि की तुलना में अधिक रहा।

जुलाई में सभी प्रमुख क्षेत्रों में बैंक ऋण वृद्धि में मामूली सुधार दर्ज किया गया (अनुबंध चार्ट ए8)।[26],[27] सेवा क्षेत्र में, ऋण वृद्धि ने अपनी ऊपरी गति बनाए रखी, जिसका मुख्य कारण व्यापार और वाणिज्यिक अचल संपत्ति रही। व्यक्तिगत ऋणों में वृद्धि को मुख्यतः आवास ऋणों और स्वर्ण एवं अन्य व्यक्तिगत ऋण खंडों में तेजी का समर्थन प्राप्त हुआ। एमएसएमई को दिए जाने वाले मजबूत ऋण वृद्धि के कारण उद्योग को दिए जाने वाले ऋण में मामूली वृद्धि दर्ज की गई।

जमा और उधार दरें

फरवरी से अगस्त 2025 के दौरान रेपो दर में हुई संचयी 100 आधार अंकों की कमी का असर उधार और जमा दरों पर मज़बूत रहा है। मौजूदा सहजता के दौर में, अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के नए और बकाया रुपया ऋणों पर भारित औसत उधार दर में क्रमशः 53 आधार अंकों और 49 आधार अंकों की गिरावट आई है। जमा पक्ष पर, नई और बकाया जमाराशियों पर भारित औसत घरेलू सावधि जमा दरों में भी कमी आई है (सारणी IV.2)।

नए और बकाया रुपया ऋणों पर भारित औसत उधार दर में गिरावट सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की तुलना में निजी बैंकों के

[25] अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की ऋण वृद्धि 5 सितंबर, 2025 तक 10.3 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) थी [एक महीने पहले 10.2 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष)]। जमा वृद्धि 5 सितंबर, 2025 तक 9.8 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) थी [एक महीने पहले 10.0 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष)]।

[26] जुलाई के अंत तक, खाद्येतर बैंक ऋण में वृद्धि 9.9 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) रही, जो जून 2025 में दर्ज 9.3 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) से अधिक है। खाद्येतर ऋण डेटा महीने के अंतिम रिपोर्टिंग शुक्रवार के लिए पाक्षिक खंड-42 विवरणी पर आधारित है, जो सभी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी) को कवर करता है।

[27] क्षेत्रीय खाद्येतर ऋण आँकड़े क्षेत्रवार और उद्योगवार बैंक ऋण (एसआईबीसी) विवरणी पर आधारित हैं, जिसमें महीने के अंतिम रिपोर्टिंग शुक्रवार से संबंधित, सभी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों द्वारा दिए गए कुल खाद्येतर ऋण का लगभग 95 प्रतिशत हिस्सा देने वाले चुनिंदा बैंक शामिल हैं। आँकड़ों में एक गैर-बैंक के एक बैंक में विलय का प्रभाव भी शामिल है।

सारणी IV.2: बैंकों की जमा और उधार दरों में संचरण

(बीपीएस में भिन्नता)

अवधि	रेपो दर	सावधि जमा दरें		उधार दरें				
		डब्लयूएडी-टीडीआर-नया जमा	डब्लूयूएडी-टीडीआर-बकाया जमा	ईबीएलआर	1-वर्षीय एमसीएलआर (माध्यिका)	डब्ल्यूएएलआर -नया रुपया उधार: समग्र	डब्ल्यूएएलआर -नया रुपया उधार: ब्याज दर प्रभाव #	डब्ल्यूए-एलआर-बकाया रुपया उधार
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)
सख्ती की अवधि मई 2022 से जनवरी 2025	+250	259	206	250	175	181	193	115
नरमी की अवधि फरवरी 2025 से अग* 2025	-100	-101	-17	-100	-40	-53	-60	-49

टिप्पणी: ईबीएलआर पर डेटा 32 घरेलू बैंकों से संबंधित है।
*: डब्ल्यूएडीटीडीआर और डबल्यूएएलआर पर डेटा जून 2025 से संबंधित है। **#:** स्थिर मात्रा में।
डब्ल्यूएएलआर: भारित औसत उधार दर; **डब्ल्यूएडीटीडीआर:** भारित औसत घरेलू सावधि जमा दर;
एमसीएलआर: निधि आधारित उधार दर की सीमांत लागत; **ईबीएलआर:** बाहरी बेंचमार्क-आधारित उधार दर।
स्रोत: आरबीआई।

मामले में अधिक थी (चार्ट IV.7)। जमा पक्ष पर, निजी बैंकों की तुलना में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए संचरण अधिक था।

इक्विटी बाजार

एसएंडपी सॉवरेन रेटिंग अपग्रेड और जीएसटी सुधारों की घोषणा के बाद अगस्त के मध्य में भारतीय शेयर बाजारों में तेजी आई। इसके बाद, महीने के अंत में शेयर बाजारों में गिरावट आई क्योंकि भारतीय उत्पादों पर अतिरिक्त अमेरिकी आयात शुल्क लागू हो गया। सितंबर की शुरुआत में निवेशकों की धारणा में सुधार के साथ बाजारों की शुरुआत सकारात्मक रही, जिसे 26-2025 की पहली तिमाही के लिए अपेक्षा से अधिक जीडीपी वृद्धि के आंकड़ों और मजबूत पीएमआई आंकड़ों के जारी होने से बल मिला। विदेशी निवेशकों की बिकवाली की गतिविधि घरेलू निवेशकों की निरंतर खरीदारी रुचि से पूरी तरह संतुलित रही (चार्ट IV.8)। घरेलू संस्थागत निवेशकों की लगातार खरीदारी के रुझान के परिणामस्वरूप उनकी शेयर बाजार में हिस्सेदारी एफपीआई से अधिक हो गई है (अनुबंध चार्ट ए9)।

चार्ट IV.7: बैंक समूहों में संचरण (फरवरी 2025 – जुलाई 2025)

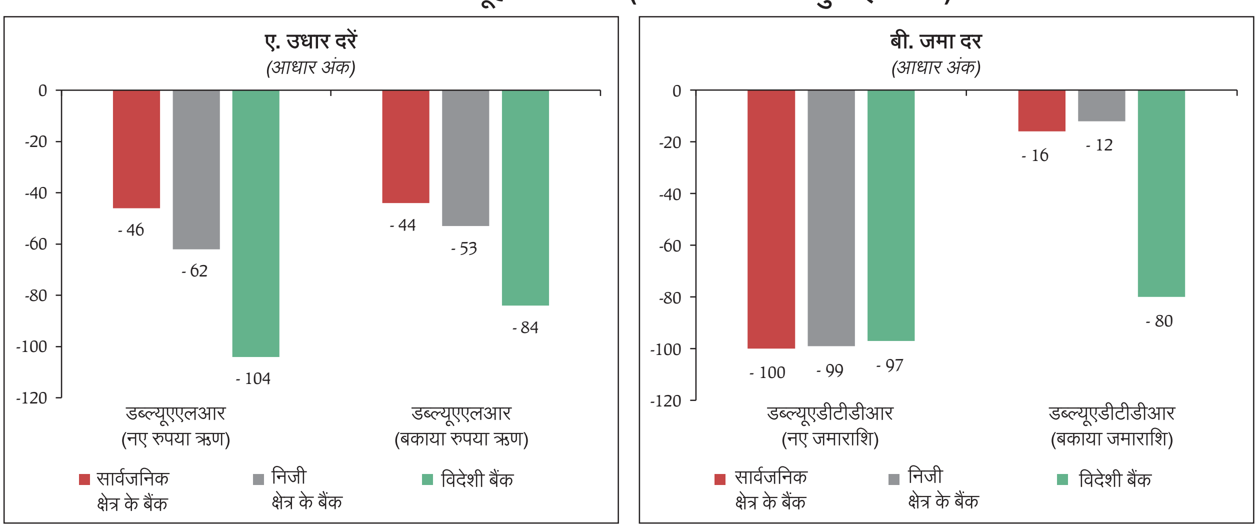

टिप्पणी: फरवरी से जुलाई 2025 के दौरान संचरण की गणना जनवरी 2025 की भारित औसत उधार और जमा दरों को जुलाई 2025 की भारित औसत दरों से घटाकर की जाती है।
स्रोत: आरबीआई।

चार्ट IV.8: बीएसई सेंसेक्स और संस्थागत प्रवाह

(सूचकांक, बायां स्केल; ₹ हजार करोड़, दायां स्केल)

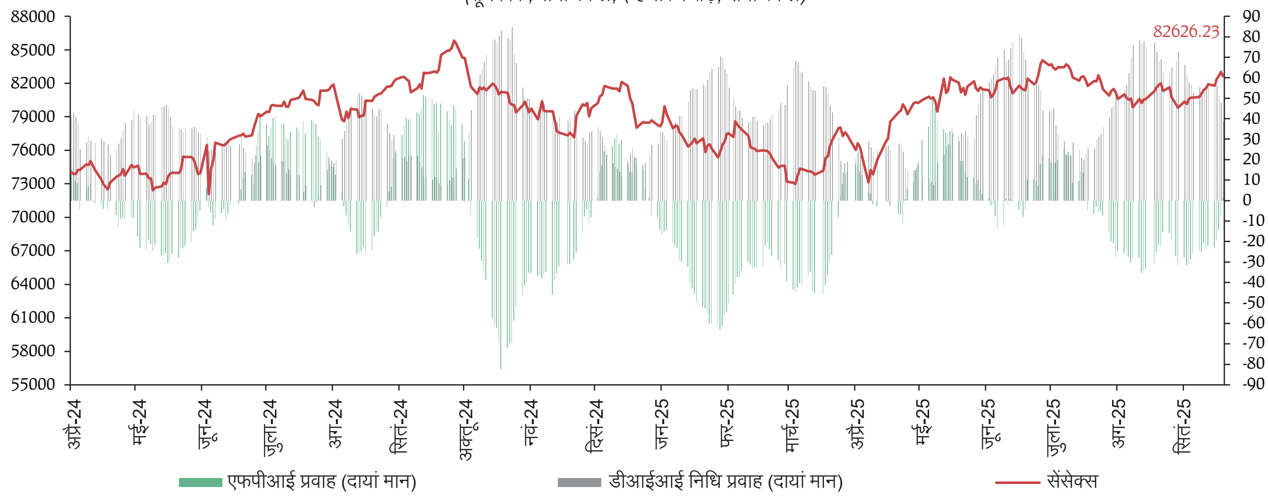

टिप्पणी: एफपीआई और म्यूचुअल फंड प्रवाह का प्रतिनिधित्व 15 दिनों की रोलिंग राशि के आधार पर किया जाता है।
स्रोत: ब्लूमबर्ग; और कैपिटलाइन।

भुगतान संतुलन

भारत का चालू खाता शेष 26-2025 की पहली तिमाही में पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में बेहतर हुआ, जिसे मजबूत सेवा निर्यात और मजबूत विप्रेषण प्राप्तियों से समर्थन मिला (चार्ट IV.9)।[28] 2025-26 की पहली तिमाही में विदेशी मुद्रा आरक्षित निधि (भुगतान संतुलन के आधार पर) में वृद्धि हुई क्योंकि निवल पूंजी प्रवाह चालू खाता घाटे से अधिक था।

वित्त के बाहरी स्रोत

जुलाई में निवल एफडीआई 38 महीने के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया, जो मजबूत सकल एफडीआई और कम प्रत्यावर्तन और बाहरी एफडीआई निवेश के कारण था।[29] सकल आवक

चार्ट IV.9: भारत का भुगतान संतुलन

(अमेरिकी डॉलर बिलियन, बाएँ स्केल पर; प्रतिशत, दाएँ स्केल पर)

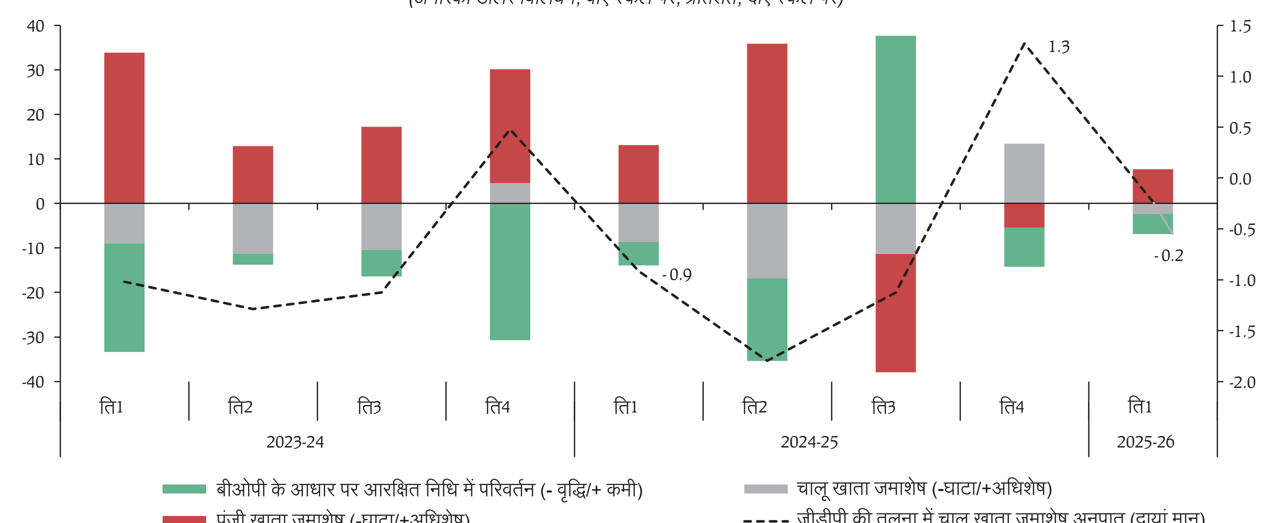

स्रोत: आरबीआई।

[28] 2025-26 की पहली तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में चालू खाता जमाशेष (-) 0.2 प्रतिशत था, जबकि 25-2024 की पहली तिमाही में यह (-) 0.9 प्रतिशत था।

[29] जुलाई 2025 में निवल एफडीआई 5 बिलियन अमेरिकी डॉलर था।

चार्ट IV10: प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह

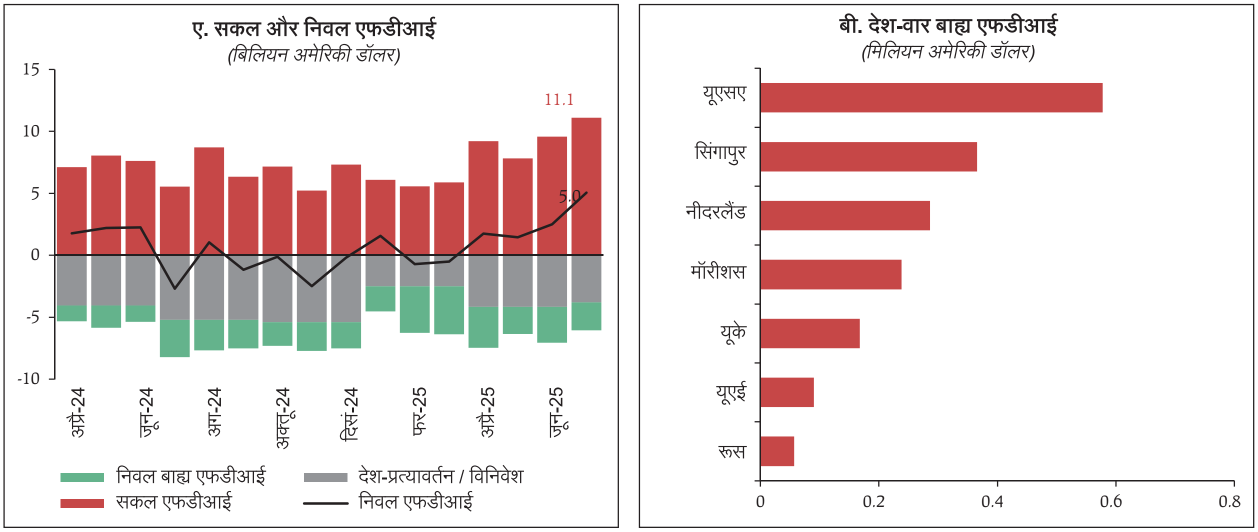

स्रोत: आरबीआई।

एफडीआई एक वर्ष पहले से दोगुना हो गया (चार्ट IV.10 ए)। सिंगापुर, उसके बाद नीदरलैंड, मॉरीशस, यूएस और यूएई, ने कुल अंतर्वाह का तीन-चौथाई से अधिक हिस्सा हासिल किया। संचार, कंप्यूटर और व्यावसायिक सेवाओं सहित विनिर्माण और सेवाएं शीर्ष प्राप्तकर्ता क्षेत्र थे। एफडीआई के प्रत्यावर्तन और बाहरी एफडीआई दोनों में कमी आई। बाहरी एफडीआई, मुख्य रूप से वित्तीय, बीमा और व्यावसायिक सेवाओं के साथ-साथ विनिर्माण की ओर निर्देशित था, जिसमें यूएस, सिंगापुर, नीदरलैंड, मॉरीशस और यूके प्रमुख गंतव्य थे (चार्ट IV.10 बी)। इन बदलावों ने एक साथ निवल एफडीआई में वृद्धि की।

अगस्त में विदेशी पोर्टफोलियो निवेश में निवल बहिर्वाह दर्ज किया गया, जिसका मुख्य कारण, भारतीय उत्पादों पर अतिरिक्त टैरिफ की अमेरिकी घोषणा के बाद बढ़े जोखिम-मुक्त रुझान के बीच इक्विटी का बहिर्वाह था (चार्ट IV.11)। इसके विपरीत, एसएंडपी ग्लोबल द्वारा भारत की सॉवरेन क्रेडिट रेटिंग में सुधार के कारण ऋण क्षेत्र में निवल अंतर्वाह देखा गया। सितंबर में अब तक (18 सितंबर तक) कुल मिलाकर निवल विदेशी पोर्टफोलियो निवेश सकारात्मक रहा, जो मुख्य रूप से अमेरिकी फेड द्वारा ब्याज दरों में कटौती के कारण निरंतर ऋण अंतर्वाह के कारण हुआ।

अप्रैल-जुलाई 2025 के दौरान बाह्य वाणिज्यिक उधारों के पंजीकरण में कमी आई। मंदी के बावजूद, अंतर्वाह बहिर्वाह से अधिक रहा, जिसके परिणामस्वरूप सकारात्मक निवल अंतर्वाह हुआ (चार्ट IV.12)। उल्लेखनीय रूप से, इस अवधि के दौरान पंजीकृत कुल बाह्य वाणिज्यिक उधारों का 40 प्रतिशत पूंजीगत व्यय के लिए था।

चार्ट IV.11: विदेशी पोर्टफोलियो निवेश

(बिलियन अमेरिकी डॉलर)

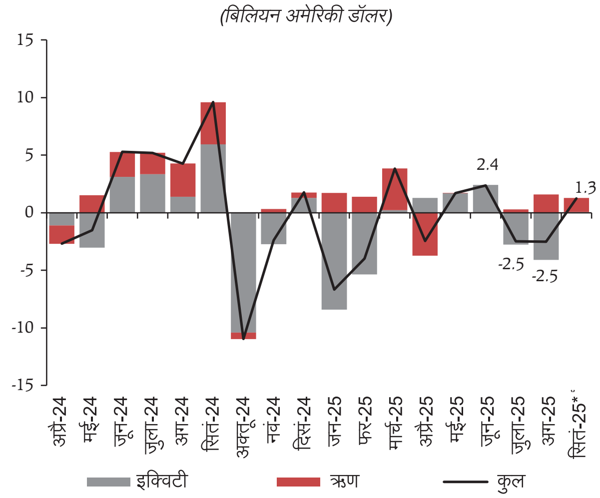

टिप्पणियाँ: 1. ऋण में हाइब्रिड इंस्ट्रूमेंट्स के अंतर्गत निवेश भी शामिल है।
2. 22 सितंबर जुलाई तक के आंकड़े।
स्रोत: नेशनल सिक्युरिटीज डिपॉजिटरी लिमिटेड (एनएसडीएल)।

चार्ट IV.12: बाहरी वाणिज्यिक उधार - पंजीकरण और प्रवाह
(यूएस $ बिलियन)

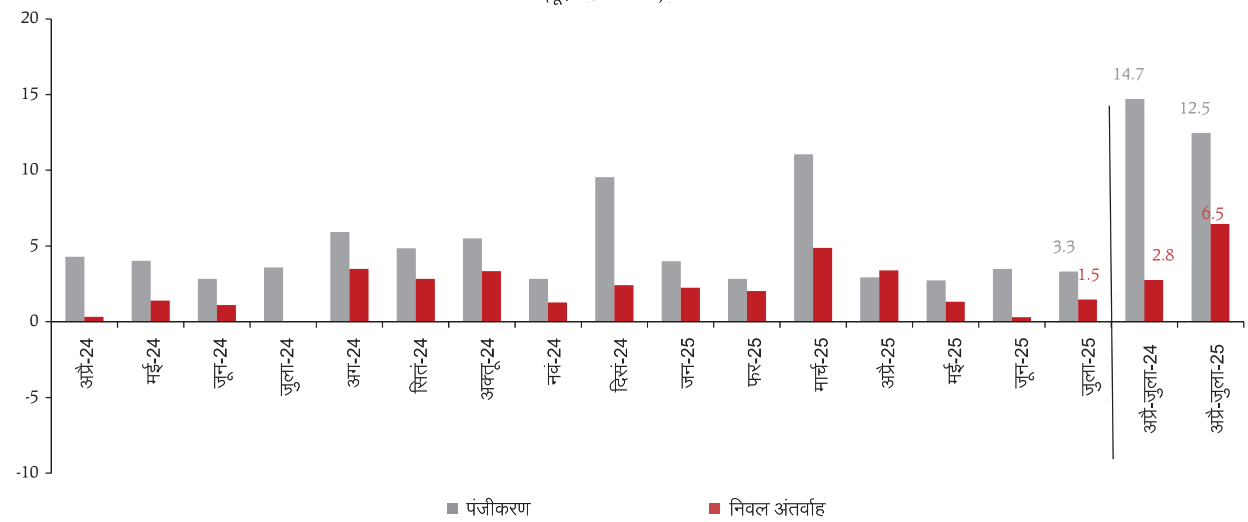

स्रोत: फॉर्म ईसीबी, आरबीआई।

भारत का विदेशी मुद्रा आरक्षित निधि पर्याप्त बना हुआ है, जो 11 महीने से अधिक के माल आयात और मार्च 2025 के अंत तक बकाया 95 प्रतिशत से अधिक विदेशी ऋण के लिए कवर प्रदान करता है (चार्ट IV.13)।[30]

विदेशी मुद्रा बाजार

प्रमुख मुद्राओं के मिले-जुले प्रदर्शन के बीच अगस्त में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपये में गिरावट दर्ज की गई। यह भारत-अमेरिका टैरिफ तनाव में वृद्धि, एफपीआई के बहिर्वाह और अमेरिकी डॉलर में मजबूती को दर्शाता है (चार्ट IV.14)।

चार्ट IV.13: भारत की विदेशी मुद्रा आरक्षित निधि
(अमेरिकी डॉलर बिलियन, बाएँ स्केल पर; महीने, दाएँ स्केल पर)

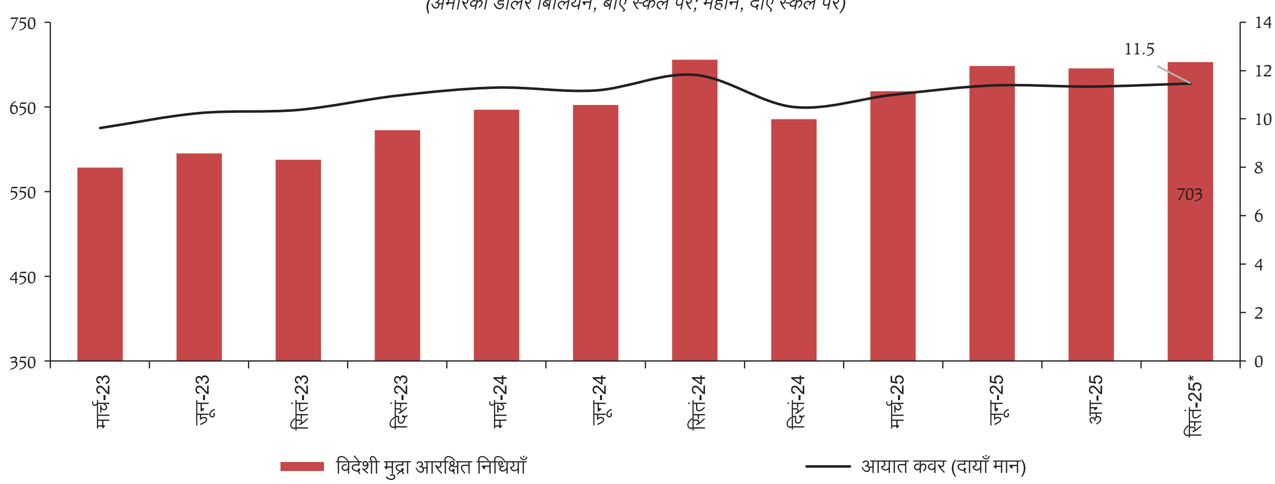

टिप्पणियाँ: 1. 12 सितंबर 2025 तक।
2. आयात कवर डेटा भुगतान संतुलन के आंकड़ों के अनुसार वार्षिक व्यापारिक आयात पर आधारित है।
स्रोत: आरबीआई।

[30] वस्तुओं और सेवाओं के लिए आयात कवर लगभग नौ महीने का था।

चार्ट IV.14: जुलाई 2025 में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले प्रमुख मुद्राओं में उतार-चढ़ाव

(प्रतिशत, माह-दर-माह, बायाँ मान, प्रतिशत, दायाँ मान)

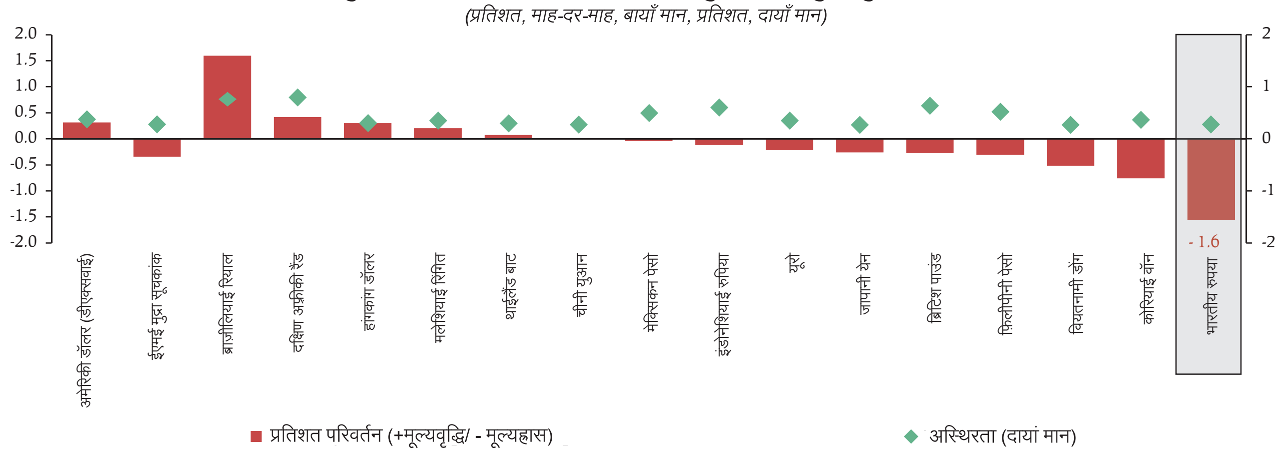

टिप्पणियां: 1. मूल्यवृद्धि/मूल्यह्रास (माह-दर-माह) की गणना मासिक औसत विनिमय दरों का उपयोग करके की जाती है।
2. अमेरिकी डॉलर (डीएक्सवाई) छह प्रमुख मुद्राओं (यूरो, जापानी येन, ब्रिटिश पाउंड, कनाडाई डॉलर, स्वीडिश क्रोना और स्विस फ्रैंक) के एक समूह के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की चाल को मापता है।
3. प्रत्येक मुद्रा के लिए, अस्थिरता को अगस्त 2025 के दैनिक विनिमय दर डेटा का उपयोग करके परिवर्तन गुणांक (100*मानक विचलन/माध्य) के रूप में मापा जाता है।

स्रोत: एफबीआईएल; थॉमसन रॉयटर्स; और आरबीआई स्टाफ के अनुमान

वास्तविक प्रभावी संदर्भ में, अगस्त में भारतीय रुपये का अवमूल्यन हुआ (चार्ट IV.15ए)। वास्तविक प्रभावी विनिमय दर में अवमूल्यन मुख्यतः नॉमिनल प्रभावी विनिमय दर में अवमूल्यन के कारण हुआ, जिसका सीमांत सापेक्ष मूल्य प्रभाव था (चार्ट IV.15बी)।

V. निष्कर्ष

हालाँकि अमेरिका द्वारा उच्च आयात शुल्क लगाने से घरेलू समष्टि-परिदृश्य पर कुछ प्रतिकूल प्रभाव पड़ा, लेकिन उसके बाद के घटनाक्रमों ने अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ता को रेखांकित किया है। एसएंडपी द्वारा सॉवरेन रेटिंग में सुधार इसकी मज़बूत

चार्ट IV.15: 40-मुद्रा वास्तविक प्रभावी विनिमय दर में उतार-चढ़ाव

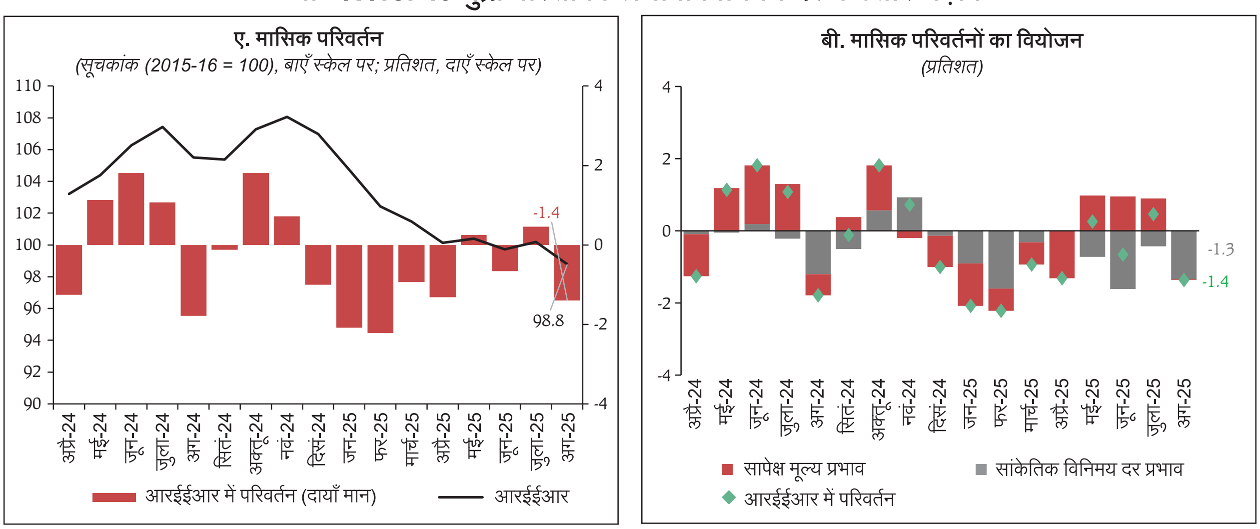

टिप्पणि: 100 से ऊपर (नीचे) आरईईआर सूचकांक आधार वर्ष 2015-16 की तुलना में 40 प्रमुख व्यापारिक भागीदारों के मुकाबले मूल्यवृद्धि (मूल्यह्रास) को इंगित करता है।

स्रोत: आरबीआई।

वृहद-बुनियादी बातों की स्वीकृति थी। 26-2025 की पहली तिमाही के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) अनुमानों ने घरेलू संवृद्धि के चालकों की सुदृढ़ता को और पुष्ट किया। अगस्त के उच्च आवृत्ति संकेतक, विनिर्माण और सेवा गतिविधियों को दशक के उच्चतम स्तर पर दर्शाते हैं।

इस परिदृश्य में, दूसरी छमाही के लिए संवृद्धि का दृष्टिकोण आशावादी है। स्वस्थ कॉर्पोरेट तुलन पत्र और सरकार द्वारा संरचनात्मक सुधारों पर ध्यान केंद्रित करना अर्थव्यवस्था के उज्ज्वल बिंदु हैं। ऐतिहासिक जीएसटी सुधारों से व्यापार करने में आसानी, कम खुदरा कीमतों और उपभोग संवृद्धि चालकों की मजबूती में उल्लेखनीय लाभ के माध्यम से उत्तरोत्तर सकारात्मक प्रभाव पड़ना चाहिए। अधिक खरीफ बुवाई से कृषि क्षेत्र में निरंतर संवृद्धि की गति बढ़ने की उम्मीद है, साथ ही खाद्य कीमतों पर भी नियंत्रण रहेगा। अग्रिम-भारित मौद्रिक नीति सहज उपायों का संचरण अच्छा रहा है। परिवारों के लिए आयकर राहत और रोजगार बढ़ाने वाले उपायों[31] के साथ, दूसरी छमाही में उपभोग मांग में निरंतर वृद्धि और संभावित रूप से उच्च निवेश और मजबूत संवृद्धि गति के एक अच्छे चक्र के लिए मंच तैयार है, जो लगातार वैश्विक अनिश्चितताओं पर काबू पा रहा है।

[31] सरकार की रोज़गार-संबंधी प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत। अधिक जानकारी के लिए कृपया https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2141129 देखें।

अनुबंध

चार्ट ए1: वैश्विक आपूर्ति शृंखला दबाव सूचकांक

(औसत मान से मानक विचलन)

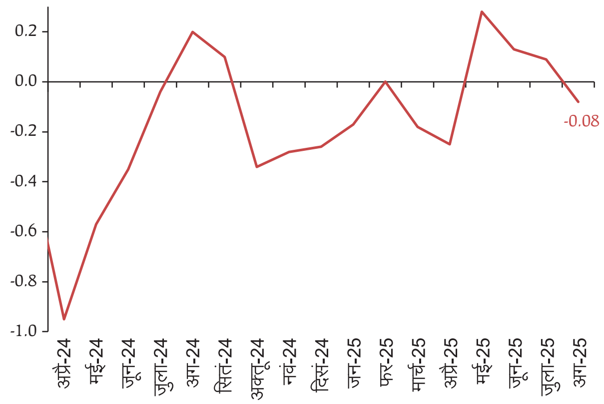

स्रोत: फेडरल रिजर्व बैंक ऑफ न्यूयॉर्क।

चार्ट ए3: भारत का व्यापारिक निर्यात

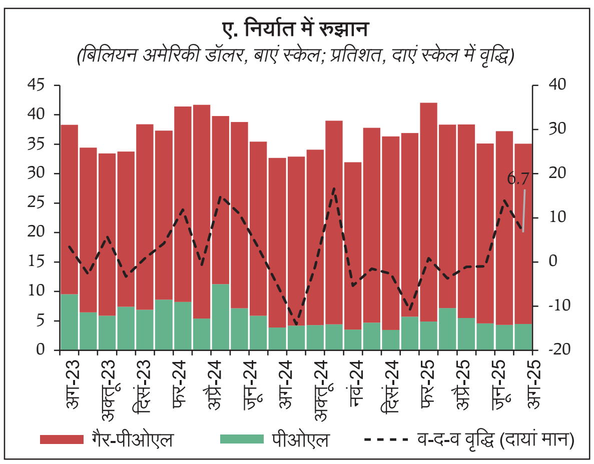

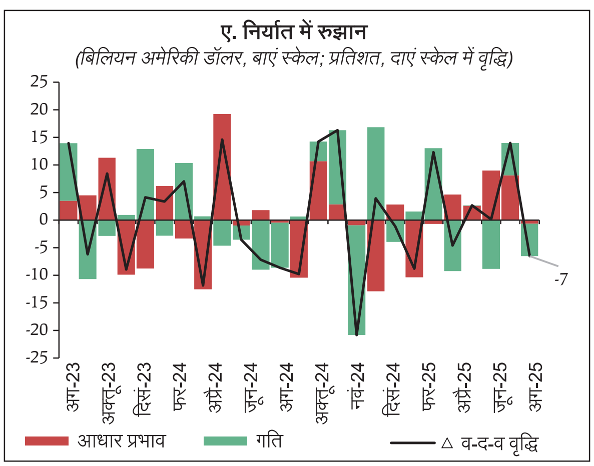

टिप्पणी: पीओएल: पेट्रोलियम, तेल और स्नेहक।
स्रोत: पीआईबी, डीजीसीआई&एस; और आरबीआई स्टाफ के अनुमान।

चार्ट ए2: मुद्रास्फीति अंतराल (वास्तविक घटाव लक्ष्य)

(प्रतिशत अंक)

टिप्पणी: अमेरिका के लिए मुद्रास्फीति अमेरिकी (पीसीई) डेटा पर आधारित है।
स्रोत: ब्लूमबर्ग; और आरबीआई स्टाफ के अनुमान।

चार्ट ए4: भारत का व्यापारिक आयात

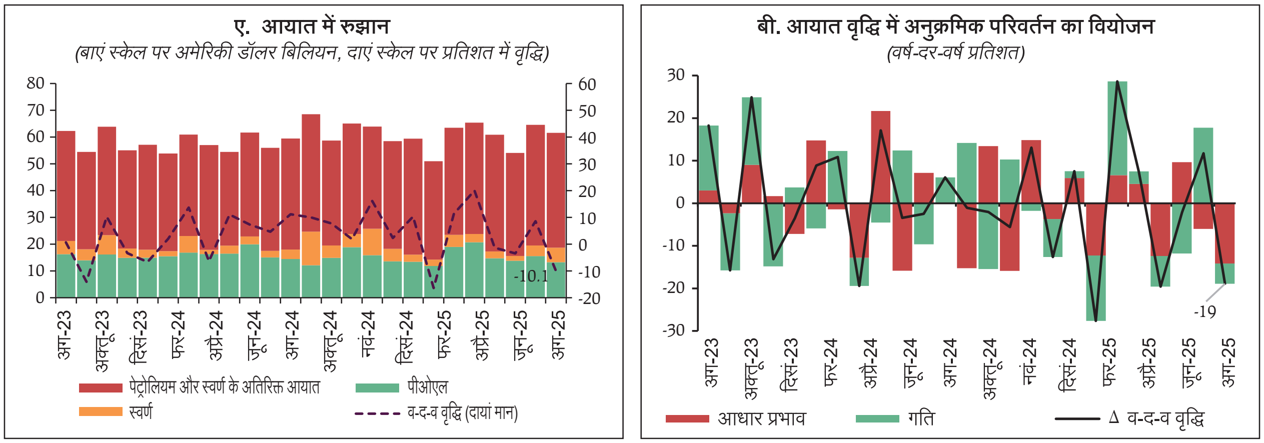

स्रोत: पीआईबी; डीजीसीआई और एस और आरबीआई स्टाफ के अनुमान।

चार्ट ए5: भारत के लिए आपूर्ति शृंखला दबाव सूचकांक

(औसत से मानक विचलन)

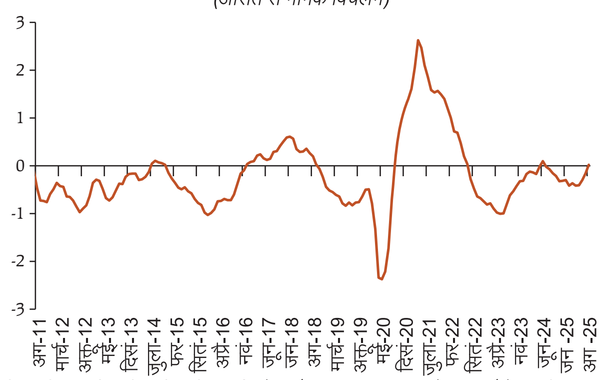

टिप्पणी: आईएसपीआई लंबी अवधि के औसत (मार्च 2005 से शुरू होने वाली समय शृंखला) से प्रत्येक महीने में आपूर्ति शृंखला की स्थिति के विचलन को दर्शाता है।
स्रोत: आरबीआई स्टाफ के अनुमान।

चार्ट ए6: जीडीपी डिफ्लेटर

(प्रतिशत)

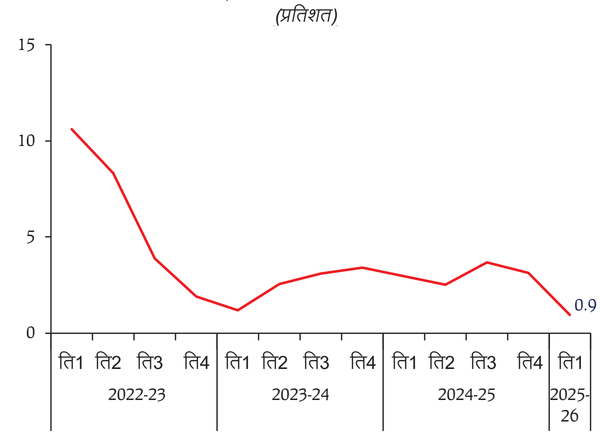

स्रोत: पीआईबी; डीजीसीआई और एस और आरबीआई स्टाफ के अनुमान।

चार्ट ए7: अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक: ऋण और जमाराशि वृद्धि

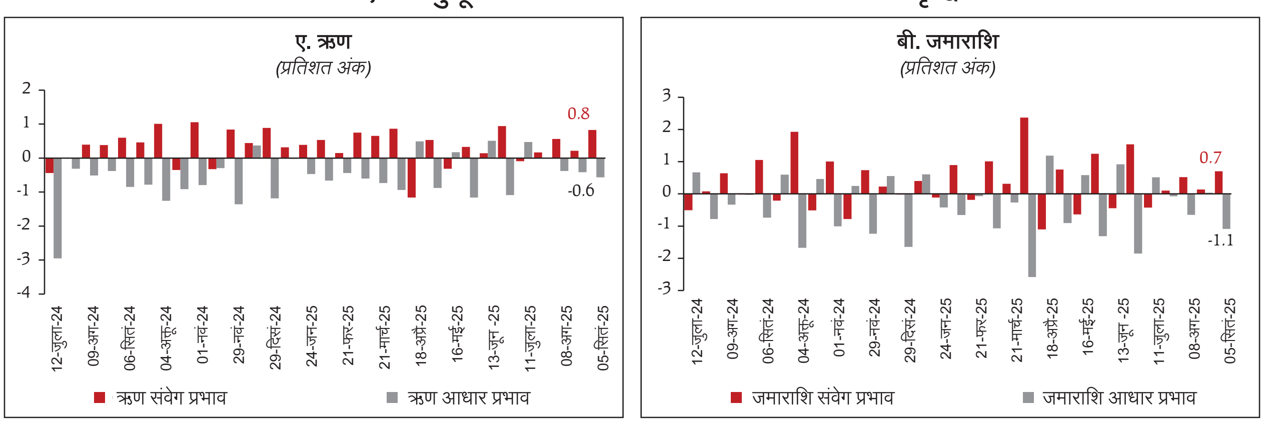

टिप्पणी: अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के आंकड़ों में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक शामिल हैं। आंकड़ों में किसी गैर-बैंक के बैंक में विलय का प्रभाव शामिल है।
स्रोत: पाक्षिक खंड 42 विवरणी, आरबीआई।

चार्ट ए8: बैंक ऋण का क्षेत्रवार आबंटन

(वर्ष-दर-वर्ष प्रतिशत)

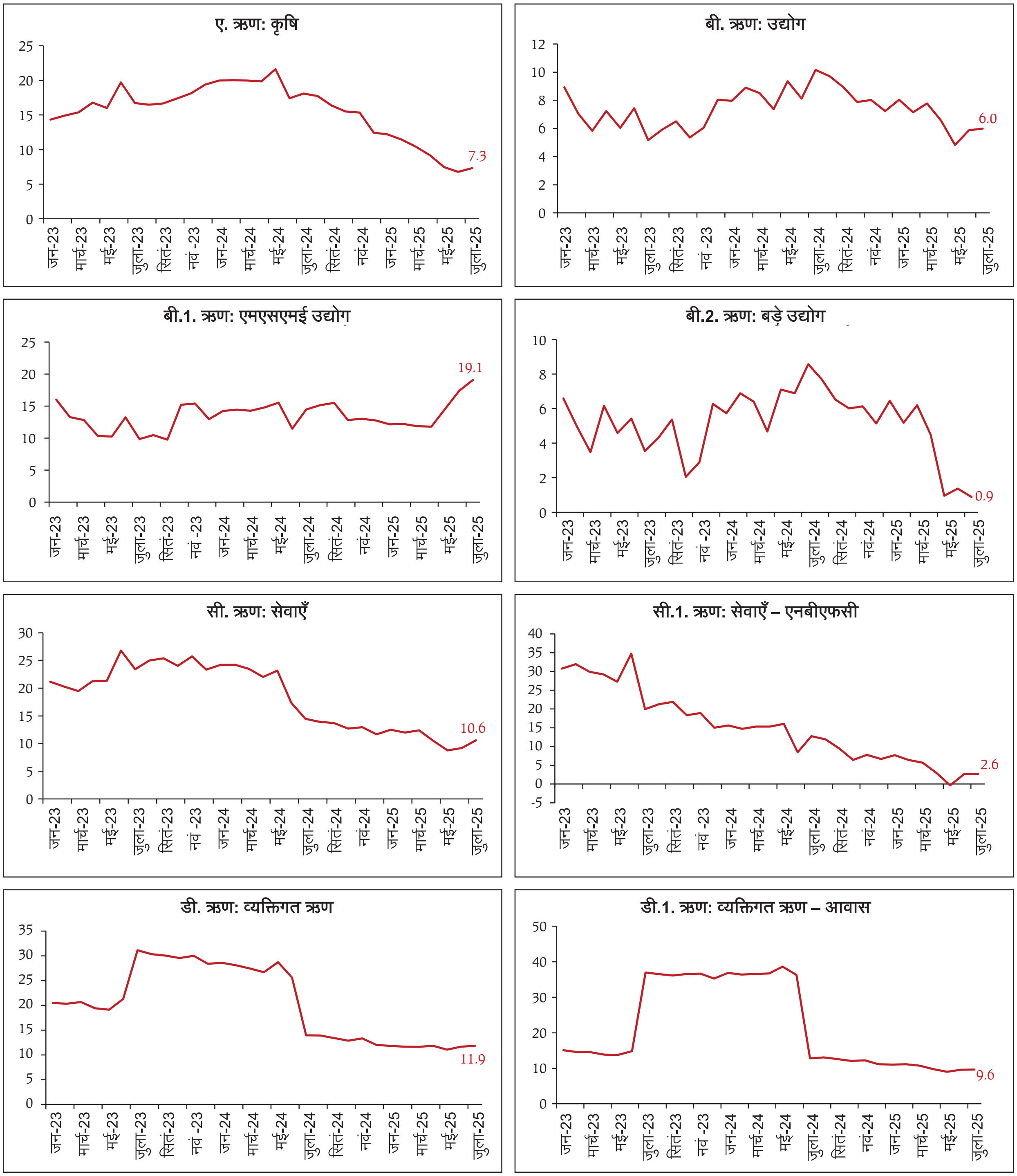

टिप्पणियां: 1. आंकड़े अनंतिम हैं। क्षेत्रवार गैर-खाद्य ऋण आंकड़े क्षेत्रवार और उद्योगवार बैंक ऋण (एसआईबीसी) विवरणी पर आधारित हैं, जिसमें चुनिंदा बैंक शामिल हैं, जो महीने के अंतिम रिपोर्टिंग शुक्रवार तक सभी एससीबी द्वारा दिए गए कुल गैर-खाद्य ऋण का लगभग 95 प्रतिशत हिस्सा हैं। एसआईबीसी विवरणी के अंतर्गत आने वाले बैंक समूह हैं - सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, निजी क्षेत्र के बैंक, विदेशी बैंक और लघु वित्त बैंक।
2. आंकड़ों में किसी गैर-बैंक के किसी बैंक में विलय के प्रभाव को शामिल किया गया है।

स्रोत: आरबीआई।

चार्ट ए9: भारतीय इक्विटी बाजारों में प्रमुख निवेशकों की हिस्सेदारी

(प्रतिशत, तिमाही की समाप्ति)

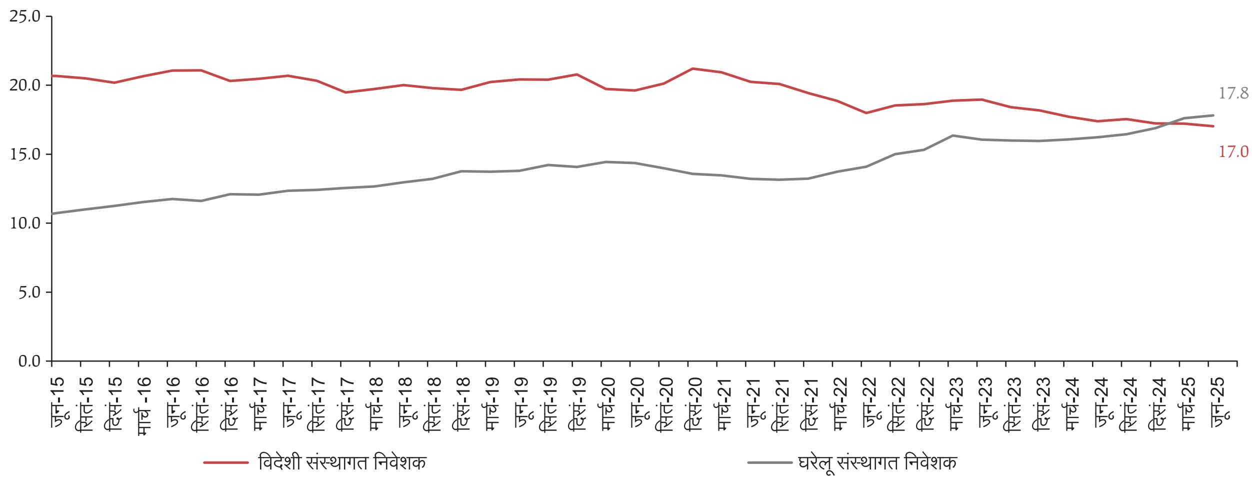

टिप्पणी: भारतीय इक्विटी बाजार के आँकड़े एनएसई-सूचीबद्ध कंपनियों के माध्यम से लिए गए।
स्रोत: प्राइम डेटाबेस।

सारणी ए1: वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि

(वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि, प्रतिशत में)

घटक	2024-25 में हिस्सा (प्रतिशत)	भारित योगदान (प्रतिशत अंक)		2023-24				2024-25				2025-26
		2023-24	2024-25	ति1	ति2	ति3	ति4	ति1	ति2	ति3	ति4	ति1
I. कुल उपभोग व्यय	**65.6**	**4.0**	**4.3**	**7.1**	**5.1**	**5.3**	**6.3**	**7.0**	**6.1**	**8.3**	**4.7**	**7.1**
निजी	56.5	3.2	4.0	7.4	3.0	5.7	6.2	8.3	6.4	8.1	6.0	7.0
सरकारी	9.1	0.8	0.2	5.3	20.1	2.3	6.6	-0.3	4.3	9.3	-1.8	7.4
II. सकल पूंजी निर्माण	**36.8**	**3.8**	**2.5**	**8.9**	**11.9**	**12.4**	**9.1**	**6.2**	**7.7**	**4.9**	**7.8**	**6.4**
स्थिर निवेश	33.7	3.0	2.4	8.4	11.7	9.3	6.0	6.7	6.7	5.2	9.4	7.8
III. निवल निर्यात												
निर्यात	21.6	0.5	1.4	-7.0	4.6	3.0	7.7	8.3	3.0	10.8	3.9	6.3
आयात	22.5	3.3	-0.9	18.0	14.3	11.3	11.4	-1.6	1.0	-2.1	-12.7	10.9
सकल घरेलू उत्पाद	**100.0**	**9.2**	**6.5**	**9.7**	**9.3**	**9.5**	**8.4**	**6.5**	**5.6**	**6.4**	**7.4**	**7.8**

स्रोत: एनएसओ; और आरबीआई स्टाफ के अनुमान।

सारणी ए2: 56वीं जीएसटी परिषद की मुख्य सिफारिशें					
	से (प्रतिशत, जीएसटी दर)	तक (प्रतिशत, जीएसटी दर)		से (प्रतिशत, जीएसटी दर)	तक (प्रतिशत, जीएसटी दर)
दैनिक आवश्यक वस्तुएँ			**किसान और कृषि**		
केस तेल, शैम्पू, टूथपेस्ट, नहाने का साबुन, बार, टूथब्रश, शेविंग क्रीम	18	5	ट्रैक्टर के टायर और पुर्जे	18	5
मक्खन, घी, पनीर, डेयरी स्प्रेड	12	5	निर्दिष्ट जैव-कीटनाशक, सूक्ष्म-पोषक तत्व	12	5
पहले से पैक नमकीन, भुजिया, मिक्सचर	12	5	ड्रिप सिंचाई प्रणाली और स्प्रिंकलर	12	5
बर्तन	12	5	मिट्टी में गहराई तक जाने, खेती करने, कटाई और थ्रेसिंग के लिए खेती, बागवानी या वानिकी मशीनें	12	5
दूध की बोतलें, क्लिनिकल डायपर, वगैरह	12	5			
सिलाई मशीनें और पुर्जे	12	5			
स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र			**ऑटोमोबाइल**		
व्यक्तिगत स्वास्थ्य और जीवन बीमा	18	*'शून्य'*	पेट्रोल और पेट्रोल हाइब्रिड, एलपीजी, सीएनजी कारें (कुछ खास तरह की)	28	18
थर्मामीटर	18	5	डीजल और डीजल हाइब्रिड कारें (कुछ खास तरह की)	28	18
मेडिकल ग्रेड ऑक्सीजन	12	5	तीन पहिया वाहन	28	18
सभी डायग्नोस्टिक किट और अभिकर्मक	12	5	मोटर साइकिलें (कुछ प्रकार की)	28	18
ग्लूकोमीटर और टेस्ट स्ट्रिप्स	12	5	माल के परिवहन के लिए मोटर वाहन	28	18
सुधारात्मक चश्मे	12	5			
शिक्षा			**इलेक्ट्रॉनिक उपकरण**		
मानचित्र, चार्ट और ग्लोब	12	*'शून्य'*	एयर कंडिशनर	28	18
पेंसिल, शार्पनर, क्रेयॉन, पेस्टल	12	*'शून्य'*	टेलीविजन (कुछ प्रकार)	28	18
अभ्यास पुस्तकें और नोटबुक	12	*'शून्य'*	मॉनिटर और प्रोजेक्टर	28	18
रबड़	5	*'शून्य'*	बर्तन धोने की मशीनें	28	18

स्रोत: पत्र सूचना कार्यालय।

सारणी ए3: वास्तविक सकल वर्धित मूल्य (जीवीए) वृद्धि

(वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि, प्रतिशत में)

क्षेत्रक	2024-25 में हिस्सेदारी (प्रतिशत)	भारित योगदान (प्रतिशत अंक)		2023-24				2024-25				2025-26
		2023-24	2024-25	ति1	ति2	ति3	ति4	ति1	ति2	ति3	ति4	ति1
I. कृषि, पशुधन, वानिकी और मत्स्य पालन	**14.4**	**0.4**	**0.7**	**5.7**	**3.7**	**1.5**	**0.9**	**1.5**	**4.1**	**6.6**	**5.4**	**3.7**
II. उद्योग	**21.5**	**2.4**	**1.0**	**6.6**	**15.3**	**12.6**	**9.9**	**7.8**	**2.1**	**3.5**	**4.7**	**5.8**
खनन और उत्खनन	2.0	0.1	0.1	4.1	4.1	4.7	0.8	6.6	-0.4	1.3	2.5	-3.1
उत्पादन	17.2	2.1	0.8	7.3	17.0	14.0	11.3	7.6	2.2	3.6	4.8	7.7
बिजली, गैस, पानी की आपूर्ति और अन्य उपयोगिता सेवाएँ	2.4	0.2	0.1	4.1	11.7	10.1	8.8	10.2	3.0	5.1	5.4	0.5
III. सेवाएं	**64.1**	**5.8**	**4.8**	**12.1**	**8.3**	**8.5**	**8.0**	**7.2**	**7.4**	**7.5**	**7.9**	**9.0**
निर्माण	9.1	0.9	0.8	9.2	14.6	10.0	8.7	10.1	8.4	7.9	10.8	7.6
व्यापार, होटल, परिवहन, संचार और प्रसारण से संबंधित सेवाएँ	18.5	1.4	1.1	11.0	5.4	8.0	6.2	5.4	6.1	6.7	6.0	8.6
वित्तीय, अचल संपत्ति और पेशेवर सेवाएँ	23.8	2.4	1.7	15.0	8.3	8.4	9.0	6.6	7.2	7.1	7.8	9.5
लोक प्रशासन, रक्षा और अन्य सेवाएँ	12.7	1.1	1.1	9.3	8.9	8.4	8.7	9.0	8.9	8.9	8.7	9.8
IV. मूल कीमतों पर जीवीए	**100.0**	**8.6**	**6.4**	**9.9**	**9.2**	**8.0**	**7.3**	**6.5**	**5.8**	**6.5**	**6.8**	**7.6**

स्रोत: एनएसओ; और आरबीआई स्टाफ के अनुमान।